

>

Title: Discussion on the situation arising out of the threat being posed to the very existence of River Ganga and the Himalayas due to their ruthless exploitation.

श्री रेवती रमण सिंह (इलाहाबाद): सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि संयोग से आप आसन पर बैठे हैं और उत्तराखण्ड के गंगोत्री से ही आते हैं, जहाँ से गंगा का उद्गम होता है, आप उसी क्षेत्र के रहने वाले हैं, जिस देश में गंगा बहती है, उस देश के आप रहने वाले हैं,

सभापति महोदय : हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है।

श्री रेवती रमण सिंह : आप पूरे देश में घूम-घूम कर यह प्रवचन करते हैं। जहाँ-जहाँ आप जाते हैं वहाँ गंगा के महात्म्य के बारे में वर्णन भी करते हैं। लेकिन मुझे अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि गंगा, जो हमारी संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक है, उस प्रतीक को विनष्ट करने का काम, उस प्रतीक को समाप्त करने का काम उत्तराखण्ड की सरकार कर रही है। मान्यवर, भागीरथी ने सदियों तक तपस्या कर के गंगा को पृथ्वी पर अवतरित करने का काम किया। यह हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखा हुआ है। यह कहा गया है कि गंगा पवित्र है, उसका जल अमृत है। अगर गंगा के जल को बोतल में रख दें तो उसमें कभी-भी कीड़े नहीं पड़ते हैं। वह एकदम साफ़ रहता है। दो महाकुंभ गंगा के किनारे लगते हैं। एक हरिद्वार का महाकुंभ लगता है, जहाँ के आप निवासी हैं और एक महाकुंभ प्रयाग में लगता है, जहाँ गंगा बहती है। इन दोनों महाकुंभों में करोड़ों की संख्या में देश-विदेश के पर्यटक आते हैं, श्रद्धालु आते हैं, तरह-तरह के साधु-महात्मा आते हैं। हमें लगता है कि आप भी वहाँ जाते होंगे, लेकिन, आज गंगा को पूरी तरह से विनष्ट करने का एक षडयंत्र चल रहा है। इस षडयंत्र का नतीजा यह होगा कि 50 करोड़ की आबादी जो गंगा पर गुजर-बसर करती है, गंगा के किनारे जो लोग चार प्रदेशों में निवास करते हैं, उनका जीवन-यापन खत्म हो जाएगा।

16.28 hrs.

(Dr. Raghuvansh Prasad Singh in the Chair)

मान्यवर, मैं आपको बधाई देता हूँ कि संयोग आप आ गए हैं। आप भी इससे प्रभावित हैं और इसके ज्ञाता भी हैं। मान्यवर, गंगा के महत्व को समझते हुए प्रधानमंत्री जी ने सन् 2008 में गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित किया था। आज सन् 2011 खत्म होने वाला है लेकिन संभवतः एक बैठक भी नहीं हुई है। गंगा के संरक्षण के लिए कोई कानून भी नहीं बनाया गया है। मुझे अफ़सोस है कि प्रधानमंत्री उसके अध्यक्ष हैं, लेकिन उनको समय नहीं मिल रहा है कि एक बैठक रखें और यह देखें कि गंगा की क्या दुर्दशा हो रही है। सवाल यह है कि गंगा बचेगी कि नहीं, उसका अस्तित्व बचेगा कि नहीं बचेगा? केवल गंगा ही नहीं हमारी जितनी भी नदियाँ हैं चाहे यमुना हो या अन्य सहायक नदियाँ जो वहाँ से निकलती हैं, सब का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। उनका अस्तित्व दो तरह से खतरे में पड़ गया है। एक तो कार्बनडाई अक्साईड की वजह से ग्लेशियर हर साल 20 मीटर खिसक रहे हैं। दूसरा, हमने बांधों की शृंखला बनाई है, पहले वहाँ पर तीन बांध बनाए गए थे। जब टिहरी बांध बनाया गया तो यह कहा गया कि इससे 2400 मेगावाट बिजली मिलेगी और डेढ़ लाख हैक्टैअर भूमि की सिंचाई होगी। आज वास्तविकता यह है कि टिहरी से मात्र 400 मेगावाट बिजली मिल रही है और सिंचाई केवल कागजों में नाममात्र की हो रही है। इससे बिहार तक सिंचाई होनी थी, महोदय, आप बिहार से आते हैं, क्या आप बता सकते हैं कि कहीं बिहार में गंगा का पानी सिंचाई के लिए जाता है? पटना में गंगा का बहुत बड़ा पाट था, बनारस में बहुत बड़ा पाट था, इलाहाबाद में गंगा अचिरत तरीके से बहती थी, लेकिन आज वह नाते के रूप में बह रही है। कानपुर आदि जितने भी शहर हैं, पटना बता दिया, गंगासागर तक जाते-जाते गंगा की स्थिति यह हो जाती है कि मल-मूत्र से गंगा पानी ही गंगासागर में जाता है। गंगा का शुद्ध जल वहाँ जाता ही नहीं है।

मान्यवर, इतना ही नहीं, दो बांध और बनाये गये, एक बांध हरिद्वार में बनाया गया और एक नरौरा में बनाया गया। उसके बाद एक बांध मनेरी भाती में और बना दिया गया। इतने पर ही उत्तराखण्ड की सरकार को संतोष नहीं हुआ। जो गंगा की प्रमुख सहयोगी नदियाँ हैं, केदारनाथ धाम से निकलने वाली नदियाँ हैं, मंदाकिनी के ऊपर उत्तराखण्ड की सरकार के द्वारा इतने बांध बनाये जा रहे हैं कि 115 किलोमीटर तक, जहाँ से मंदाकिनी बहती है, वह पूरा का पूरा क्षेत्र समाप्त हो गया है। जो गंगा अचिरत धारा से बहती थी, उसमें तमाम औषधि गुण, तमाम उसमें इस तरह के पदार्थ आते थे, जीव-जन्तु उसमें पलते थे, उन सबको समाप्त करने का काम कर दिया है। ऐसा लगता है कि गंगा कहीं दिखाई ही नहीं पड़ेगी। जयराम रमेश जी, पहले पर्यावरण और वन मंत्री थे, आज मंत्री जी जयंती नटराजन जी बैठी हुई हैं, मैं उनसे कहना चाहूँगा कि जरा आप यह देखिये कि केदारनाथ धाम से मंदाकिनी नदी पर पूरी की पूरी बांध की शृंखला बनायी गयी। वहाँ के लोगों के विरोध करने के बावजूद भी वह बनता ही जा रही है।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से यह नवशा और सीडी भिजवाना चाहूँगा। अगर आप इसे देखेंगे, मैं चाहूँगा कि एक दिन लोक सभा के जितने भी सदस्य हैं, इन्हें बुलाकर आप स्वयं यह निर्णय कर सकते हैं, क्योंकि आप चेयर पर बैठे हुए हैं, अगर इसे आप दिखा दें और यह सीडी भी मैं आपको भेज रहा हूँ। इसमें एनडीटीवी ने बड़े स्पष्ट रूप से यह दिखाया है कि गंगा ही समाप्त होने वाली है, अगर इस पर तत्काल सरकार ने प्रभावी कार्रवाई नहीं की।

मान्यवर, वहाँ के लोग इसका विरोध भी कर रहे हैं, लेकिन उनके विरोध के बावजूद भी वहाँ काम निरन्तर चल रहा है। राष्ट्रीय नदी प्राधिकरण तो गठित किया गया, लेकिन इसे कानूनी दर्जा अभी तक नहीं दिया गया है। विकास के नाम पर बिजली बनाने के लिए, मान्यवर, गंगा के साथ-साथ हिमालय का भी अस्तित्व समाप्त होने वाला है। हिमालय चार-पांच सिक्रिक जोन पर बसा हुआ है, कच्चा पहाड़ है और कभी भी वह टूट जाये। एक बार मदन मोहन मालवीय जी ने कहा था, जब अंग्रेज बांध बनाने लगे तो मदन मोहन मालवीय जी इलाहाबाद से आये और उन्होंने कहा कि हम आमरण अनशन करेंगे, अंग्रेजों ने बंद कर दिया। आज हमारी ही सरकार जो अपने आपको धर्म का रक्षक कहती है, हुक्मदेव नारायण यादव जी जिसके बड़े भारी पोषक हैं, आज उसी पार्टी की सरकार गंगा को विनष्ट रही है, हिमालय को विनष्ट कर रही है।

मान्यवर, इतना उसे विनष्ट करने की तैयारी हो रही है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि अगर टिहरी का बांध टूटा तो वहाँ से लेकर पूरे इलाहाबाद तक जलमग्न हो जायेगा। एक भी आदमी नहीं बचेगा। क्या कभी सरकार ने इस संबंध में सोचा है? कभी भारत सरकार ने इस पर विचार किया है? खाली आपने मज़ाक बना दिया।
...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): आज भी कोई नहीं बैठा है। ...(व्यवधान)

श्री रेवती रमण सिंह : यहाँ पर्यावरण मंत्री बैठी हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : एक मंत्री नहीं, और मंत्रियों को भी होना चाहिए था।

श्री रेवती रमण सिंह : कायदे से तो प्रधान मंत्री को भी होना चाहिए था क्योंकि गंगा बेसिन प्राधिकरण के वे अध्यक्ष हैं। लेकिन वे यहाँ नहीं हैं। वे लोकपाल बनाने में व्यस्त हैं ~~वे~~ *

...(व्यवधान) मान्यवर, हम पहले बता चुके हैं लेकिन एक बार जब इसका विरोध हुआ और प्रो. अग्रवाल जो कि पर्यावरणविद् हैं, वे आमरण अनशन पर बैठे, तब प्रधान मंत्री ने हस्तक्षेप किया। हस्तक्षेप करने के बाद वहाँ चार योजनाओं को उन्होंने स्थगित करने का काम किया। लोहारी, नाग, पाला मनेरी, और भैरव घाटी के बांधों को उन्होंने निरस्त किया। चार बाँध निरस्त किये लेकिन अभी 150 बांधों का काम चल रहा है। अभी 550 बांधों को चिह्नित किया गया है कि इन पर और काम चलेगा। बिजली कितनी मिल रही है? यदि वे सब परियोजनाएँ तैयार हो जाएँ तो पूरे देश को जो बिजली मिलती है, उसका एक प्रतिशत बिजली ही मिलेगी। मैं भारत सरकार से कहना चाहता हूँ कि तत्काल इसका काम रूकवा दीजिए। अगर आपको गंगा को बचाना है, आपको अलकनंदा को बचाना है, आपको मंदाकिनी को बचाना है तो मेरा आपसे आग्रह है कि तत्काल इस काम को रूकवा दीजिए और गंगा की अवरिक्त धारा को बहने दीजिए, गंगा में जल प्रवाह होने दीजिए और चारों तरफ से जो गंदगी और मल-मूत्र गंगा में जा रहा है, इसको रोकने का काम करने का भी यहाँ से प्रयास होना चाहिए। पहले राजीव गांधी के समय में विश्व बैंक ने 600 करोड़ रुपये दिये थे गंगा की सफाई के लिए। वे पैसे कहाँ गए, पता नहीं। अभी 6000 करोड़ रुपये विश्व बैंक ने फिर दिये हैं गंगा की सफाई के लिए। यमुना की सफाई के लिए अलग से दिया है, लेकिन जब गंगा यमुना नदियाँ बँचेंगी, तब तो उनकी सफाई होगी। जब इन नदियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा तो सफाई किसकी होगी? मान्यवर, गंगा हमारी माँ की तरह है, हमारी धरोहर है। हम अगर इस धरोहर को, गंगा और हिमालय को समाप्त कर देंगे तो देश की पहचान मिट जाएगी। भारत देश का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। आज तीन नदियों का संगम इलाहाबाद में कहा जाता है। हमारी नदियाँ खत्म हो जाएँगी। गंगा नदी नहीं है। हम गंगा को एक नदी के रूप में ही नहीं जानते हैं, बल्कि गंगा और यमुना को हम माँ के रूप में स्वीकार करते हैं और इसलिए करते हैं कि 50 करोड़ लोगों की आजीविका गंगा और यमुना से चलती है। मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूँ और जयराम रमेश जी की बात वोट करना चाहता हूँ जो आपके पहले पर्यावरण मंत्री थे। उनकी बात मैं आपको इसलिए बताना चाहता हूँ कि मैं चाहूँगा कि जयराम रमेश ने वंडीप्रसाद भट्ट, इतिहासकार रामचंद्र गुहा, शेखर पाठक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. पुष्पेश पंत की मौजूदगी में श्रोताओं से भरे हॉल में कहा - "उत्तराखंड में ऐसी कई जल परियोजनाएँ शुरू की गई हैं जिन्हें पर्यावरण के लिहाज से अनुमति नहीं दी जानी चाहिए थी।" तब भी ये परियोजनाएँ चल रही हैं। कौन देखने वाला है? कोई देखने वाला नहीं है। मैं उनका दूसरा उद्घरण देना चाहता हूँ।

श्री जयराम रमेश ने कहा कि किसी भी परियोजना में कभी किसी नदी के अवरिक्त धारा को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में 70 जल विद्युत परियोजनाएँ हैं जिनके बारे में हमें यह नहीं मालूम है कि इससे पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा? मान्यवर, आपके पूर्व मंत्री 70 परियोजनाओं की बात कह रहे हैं। मैं बता रहा हूँ कि उन्होंने 150 परियोजनाओं में काम को चिन्हित कर लिया है और 550 परियोजनाओं में और काम करने जा रहे हैं। मान्यवर, इसी के साथ मैं श्री जयराम रमेश की एक और बात आपको बताना चाहूँगा। उन्होंने कहा था कि हम नदियों में पानी देखना चाहते हैं, सुंभें नहीं। एक समय आया जब उत्तराखण्ड में नदियाँ नहीं, टनेल ही टनेल दिखाई पड़ेगी। हमारा पूरा हिमालय इसीलिए प्रसिद्ध है कि वहाँ पर नदियों की अवरिक्त धारा निकलती है, लेकिन अब टनेल बना रहे हैं। मंदाकिनी में 115 किलोमीटर तक इन्होंने टनेल बना दिया। वहाँ पर केदारनाथ की घाटी समाप्त हो गई। टनेल में क्या होता है? हिमालय में विस्फोट किया जाता है, झील बनाई जाती है और उसका कचरा उसी में पड़ा रहता है। झील में मच्छर और तमाम तरह के जीव-जन्तु पाए जाते हैं। उसमें मच्छर पलते हैं जिससे वहाँ से जो पानी छोड़ा जाता है उससे बीमारियाँ होती हैं।

मान्यवर, मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करूँगा कि माननीय मंत्री जी, आप इस पर तत्काल कार्रवाई करें और एक आयोग बनाएं जिसमें पर्यावरणविद् भी हों, जिसमें इतिहासकार भी हों। सभी लोगों का एक आयोग बनाएं और तत्काल उत्तराखण्ड सरकार को यह आदेश दीजिए। मैं उम्मीद करूँगा कि हमारे माननीय सदस्य जो अभी आपके आसन पर विराजमान थे, वे इस बात का भी समर्थन करेंगे। मैं एक बात कहूँगा श्री सतपाल महाराज से, चाहे उन्हें अच्छा लगे या बुरा, पहले उत्तर प्रदेश से जो प्रस्ताव आया था, उसमें हरिद्वार को उत्तराखण्ड में शामिल नहीं किया गया था, हरिद्वार पहले उत्तर प्रदेश में था। लेकिन माननीय जोशी जी, जो उस समय शिक्षा मंत्री थे, उन्होंने हरिद्वार को उत्तराखण्ड में करवा दिया। माननीय जोशी जी, माननीय सतपाल महाराज जी, आप लोग उत्तराखण्ड के रहने वाले हैं, आप लोग इस बात पर हमारा समर्थन कीजिए कि आगे से वहाँ कोई बांध नहीं बनाया जाएगा और वहाँ पर गंगा, यमुना, आदि सभी नदियों को विनष्ट नहीं किया जाएगा, आप यह घोषणा कीजिए। मैं माननीय मंत्री जी से कहूँगा कि एक बार आप वहाँ का दौरा कीजिए। आप वहाँ का काम रूकवा दीजिए और वहाँ पर किसी भी निर्माण कार्य की अनुमति न दीजिए। गंगा नदी जहाँ-जहाँ से बहती है, आप वहाँ जाने का कष्ट करिए। आज बलिया से लेकर बनारस तक गंगा के पानी में आर्सेनिक पाया जाता है जो कि मानव जाति के पीने के लिए ही नहीं, बल्कि नहाने के लिए भी वर्जित है। यह क्यों वर्जित है क्योंकि सारी गंदगी उसमें जा रही है। सब मल-मूत्र और जितना भी कचरा है, वह गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से चाहूँगा कि माननीय मंत्री जी आज इस पर तत्काल प्रभावी कार्रवाई की घोषणा करें। मेरा इनसे आग्रह है कि आप एक दिन पूरी गंगा के किनारे का दौरा कर लीजिए और वहाँ की दुर्दशा देखने का काम करें।

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): धन्यवाद सभापति महोदय, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय - गंगा नदी और हिमालय के निर्मम दोहन के कारण उनके अस्तित्व को हो रहे खतरे - पर बोलने का अवसर दिया।

श्रीमन्, यह कहा जाता है कि हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है। प्रत्येक भारतवासी का वक्षस्थल, उसका सीना गौरव से चौड़ा हो जाता है जब वह कहता है कि मैं उस देश से आता हूँ जिस देश में पतित पावनी गंगा बहती है। तुलसी दास जी से एक संत ने पूछा कि महाराज, सबसे पवित्र जल की नदी कौन सी है तो संत शिरोमणि तुलसी दास जी ने कहा कि जो यमुना नदी है, वह पवित्र जल की नदी है। उस संत ने कहा कि महाराज, आपने गंगा का उच्चारण नहीं किया तो

तुलसी दास जी ने कहा कि गंगा जल नहीं, गंगा अमृत है। जब गंगा को हम माता कहते हैं तो उस मां शब्द के अंदर पूरे पोषण करने की क्षमता है। हमारे जो ऋषियों ने कहा कि गंगा हमारी माता है, उनकी यही आशा थी कि भविष्य में गंगा से लोग ऊर्जा उत्पादन करेंगे। यह गंगा पूरी धरती को, जो मरुस्थल है, उसे शस्य-श्यामला बनाएगी और लोगों को आजीविका देगी।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन में कहना चाहूंगा कि आज तालच ने मनुष्य को घेरा है। महात्मा गांधी जी ने कहा था कि प्रकृति हर किसी की जरूरत को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन आदमी के तालच को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है। आज हम में इतना तालच पैदा हो गया है कि हम गंगा और हिमालय का निर्मम दोहन कर रहे हैं। वैसे गंगा इस धरती की धारा नहीं थी, इसे वैतरणी कहा जाता था। ये स्वर्ण में बहती थी, परन्तु जब भागीरथ ने तपस्या, योग एवं कर्म किया तो वह स्वर्ण को धरती पर ले आया। यही गंगा की शिक्षा एव गंगा का संदेश है। गंगा के अंदर यह भावना छिपी है कि प्यासा उसके पास आता है, गंगा उसकी प्यास को बुझाती है। उससे यह नहीं पूछती कि तुम्हारा धर्म एवं जाति क्या है। तुम्हारे पास पैसा है या तुम निर्धन हो। यह कुछ नहीं पूछती, केवल प्यासे की प्यास को बुझाती है। आज गंगा की यह भावना, जो पूरे देश को एकता में जोड़ने की क्षमता रखती है, आज उस धारा का दोहन हो रहा है। गंगा को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए 24 सितम्बर, 83 से अक्टूबर, 1983 तक मुझे भारत जागो पद यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमने भगवान बंदी विशाल के चरणों से चल करके गंगा के प्रदूषण को दूर करने के लिए एक पैदल यात्रा की, जिसमें एक महीना चार दिन का समय लगा। उस यात्रा के दौरान मैंने बड़े करीब से देखा कि किस प्रकार से गंगा की धारा को हमने गटर की नाली बना दिया है। आज पूरे शहर और कस्बे का जो सीवेज है, वह गंगा के अंदर जा रहा है। गंगा के किनारे पर जो शमशान घाट है, वहां किस प्रकार से अधजली लाशों को गंगा के अंदर डाल रहे हैं, प्रवाहित कर रहे हैं। गंगा की जो निर्मल धारा होती थी, गंगा के अंदर जो भावना होती थी कि हम इसके पानी को किसी बोतल के अंदर ले जाकर अपने घर में रखेंगे। हम जब कभी शुद्ध होना चाहेंगे तो उस गंगा के जल को छिड़क कर शुद्ध हो जाएंगे। ये गंगा जल की बोतल मैंने भारत की सीमाओं में ही नहीं, बल्कि विदेशों में जो लोग रहते हैं, उनके घरों में भी देखी है। यह गंगा व्यापक है, गंगा की भावना व्यापक है।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि हमें सबसे पहले ऐसी योजना बनानी होगी, बंदीनाथ धाम के अंदर भी जो गटर की नालियां हैं, वे गंगाजी में पड़ रही हैं, उन्हें रोकना होगा। उसके लिए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाना होगा। आज हमारे पास जो टैक्नोलॉजी है, जैसे नेनो टैक्नोलॉजी है, जिसके जरिए हम सीवेज वाटर को इलैक्ट्रीसिटी में कन्वर्ट कर सकते हैं। हम सीवेज वाटर को लेकर उसका सिनिथसाइज़ करें, उसके अंदर से हार्डइंजन को निकालें और एच 2ओ को अलग करें तो उससे यह होगा कि हार्डइंजन से टर्बाइन चलेंगे और उसी सीवेज के पानी से हम बिजली पैदा करने में सक्षम हो जाएंगे। आप आज 40 मीटर बॉय 60 मीटर के स्थान पर दो सौ मेगावाट बिजली पैदा कर सकते हैं। इस प्रकार की जो नेनो टैक्नोलॉजी आज दुनिया के अंदर आई है, इसके जरिए हम सीवेज वाटर, जो गंदा पानी है, उस गंदे पानी को ले करके, उसमें से हार्डइंजन को अलग करके और एच 2ओ को अलग करके, जो Medical grade water होगा, उसे अलग करके हम स्वच्छ पानी को जनता को दे सकते हैं और हार्डइंजन से टर्बाइन चला कर बिजली भी पैदा कर सकते हैं। यह जो गंगा की धारा है, यह मां शब्द के अंदर पूरे भारतवर्ष का पालन-पोषण करने की क्षमता रखती है। माता जैसे अपने बच्चे का पोषण करती है, उसी प्रकार से गंगा करती है। आज उसके अंदर आधुनिक टैक्नोलॉजी के जरिए, जो हमारी अलॉग द रीवर, जिसे रन ऑफ द रीवर कहते हैं। उसके जरिये आज बिजली बन रही है। टिहरी डैम बना, वह बड़ी पुरानी टैक्नोलोजी थी और हमारा रशियन कोलेबोरेशन के साथ डैम बना, वह हमारा पहला प्रयोग था और उसके बाद एक नई टैक्नोलोजी आई, जिसे हम रन ऑफ दि रीवर कहते हैं। आज उसके जरिये कोई डैम नहीं बनेगा, जो हमारे माननीय सदस्य रेवती रमण सिंह जी ने आशंका जाहिर की, अब वह आशंका निर्मूल हो गई है, क्योंकि रन ऑफ दि रीवर के जरिये सुंग बनाकर पूरी नदी के पानी को उसमें प्रवाहित करके उसमें टर्बाइन लगा करके और धरती के ग्रेडिएंट का लाभ उठाकर आप उससे बिजली पैदा कर रहे हैं। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार के रन ऑफ दि रीवर जो प्रोजेक्ट्स हैं, उससे न तो डैम बनेगा, न पानी इकट्ठा होगा और न हमारा उत्तराखंड, जो सैसमिक जोन में है, उसमें भी जो भूकम्पीय क्षेत्त्र होने के नाते जो सम्भावना है कि डैम टिक नहीं पाएंगे, उससे भी निजात मिल जायेगी तो हम रन ऑफ दि रीवर के जरिये बिजली का उत्पादन करेंगे और हमारी उत्तराखंड, जो हमारे भारत का मस्तक है, वह एक ऊर्जा प्रदेश के रूप में परिवर्तित हो जायेगा, ताकि हमारे देश को ऊर्जा प्रदान कर सके, शक्ति प्रदान कर सके और भारत निर्माण में उत्तराखंड अपना योगदान दे सके।

इसके साथ मैं यह कहना चाहूंगा कि यह बड़ा महत्वपूर्ण विषय है और इस पर हमें आधुनिक टैक्नोलोजी को अपनाना होगा। आज पहाड़ों से रेता नीचे आता है, जगह-जगह अवैध खनन होता है, इल्लिगल माइनिंग होती है, जिसके लिए निगमानंद जो थे, अनशन कर रहे थे और उनके प्राणों का अन्त हो गया। मैं समझता हूँ कि भाजपा के राज में उत्तराखंड के अन्दर एक सन्त का प्राणान्त हो गया, यह एक बड़ा विचारणीय विषय है और निगमानन्द जी का एक बड़ा खेद का विषय है। इसमें मैं आपके सामने तहलका मैगजीन दिनांक दो जुलाई के बारे में कहना चाहूंगा, जिसमें कि आशीष खेतान और मनोज रावत ने बहुत सुन्दर लेख लिखा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि:

"Finally Nigamanand died on 13th June in the same hospital, in the same ward where Ramdev was being treated in the ICU just after seven days of fasting. Briefly, the glaring ironies around the story of the two men created a furore, but soon in a death as lies the real and urgent cause Nigamanand has been fighting for was quickly forgotten."

आज निगमानन्द जी, जिन्होंने अपने प्राणों का बलिदान दिया, उस पर विचार करना होगा कि आखिर जो अवैध खनन हो रहा है, इल्लिगल माइनिंग हो रही है, बेतहाशा हम रीवर बैंड को खोदे जा रहे हैं, यह रोकना होगा, इल्लिगल माइनिंग से एक तो कालाधन पैदा होता है, देश के निर्माण में वह पैसा नहीं लगता, राज्य सरकार टैक्स को प्राप्त नहीं करती है और दूसरे माफिया इसके अन्दर छा जाता है। इस प्रकार के दोहन से, इस प्रकार की इल्लिगल माइनिंग से पूरे राज्य का, पूरे देश का नुकसान होता है। मेरा आपसे निवेदन है कि इसके लिए एक प्रोपर आधुनिक टैक्नोलोजी से, साइंटिफिक टैक्नोलोजी से हम माइनिंग करें, जिससे कि रीवर बैंड धीरे-धीरे कम हो और रीवर को हम संतुलित ढंग से चलने दें और यह बहुत आवश्यक है कि साइंटिफिक सोच को हम लेकर के चलें।

मैं यह भी बताना चाहूंगा कि हमारी स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 1979 में केन्द्रीय बोर्ड को निर्देश दिया था कि वह जल प्रदूषण की रोकथाम के लिए और नियंत्रण के लिए एक व्यापक सर्वे करें, जिसके आधार पर 1984 में गंगा एक्शन प्लान का गठन किया गया। आज गंगा एक्शन प्लान के गठन के बाद उसके इम्प्लीमेंटेशन की आवश्यकता है। उसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी द्वारा फरवरी, 1985 में केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण का गठन किया गया और 350 करोड़ रुपये का प्रारम्भिक बजट इसके लिए स्वीकृत किया गया। उनके ही अथक प्रयासों और दूरदृष्टि से 1985 में गंगा परियोजना निदेशालय पर्यावरण की एक शाखा के रूप में स्थापित किया गया।

मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि यह हमारे लिए, हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए, गंगा का रक्षित होना, गंगा की रक्षा करना बहुत आवश्यक है। मैं आपसे यही निवेदन करूंगा कि इसकी कोई कार्य-योजना बने और गंगा की रक्षा हो, हिमालय का साइंटिफिक दोहन हो।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं कहना चाहूंगा:

'रावी की खानी बदलेगी, सतलुज का मुहाना बदलेगा, गर शौक में तेरे जोश रहा,

तरवीर का जामा बदलेगा, बेजार न हो, बेजार न हो, ये सारा फसाना बदलेगा,

कुछ तुम बदलो, कुछ हम बदलें, तब तो ये जमाना बदलेगा।'

श्री हवामदेव नारायण यादव (मधुबनी): सभापति महोदय, माननीय रेवती रमण सिंह जी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया और सतपाल महाराज जी ने उसका समर्थन किया। उत्तराखंड के संबंध में सतपाल महाराज जी ने बहुत सी भूमितियों का निवारण कर दिया है। सतपाल महाराज जी ने भूमितियों का निवारण किया है, तो इसमें कोई बहस की गुंजाइश नहीं है, क्योंकि वह धार्मिक व्यक्ति हैं, संत हैं, उत्तराखंड के निवासी हैं, इसलिए उनके द्वारा भूमि के निवारण करने के बाद अब तकनीकी विशेषज्ञता के संबंध में भी कोई भ्रम नहीं रह जाना चाहिए।

गंगा केवल गंगा नदी नहीं है, जल नहीं है। भारतीय शास्त्र में कहा गया है - 'धर्मार्थ काम मोक्षानाम् आरोग्यम् मूल उत्तमम्।' धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों की प्राप्ति होगी कब, जब लोग आरोग्य होंगे तब, अर्थात् इस सब के मूल में आरोग्यता है। आरोग्यता कैसे आए, जब हवा शुद्ध हो, जल शुद्ध हो, आकाश शुद्ध हो। पंचतत्व इस ब्रह्मांड में हैं, उन पांचों में अगर पवित्रता रहेगी, तभी हम आरोग्य रह सकेंगे। गंगा का महत्व इसीलिए बढ़ता है कि गंगा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों को देने वाली नदी है। सतपाल महाराज जी ने कहा कि वह हमारी मां हैं। हम तो गंगा मैय्या कहते हैं और गंगा मैय्या इसलिए कहते हैं कि मां के दूध से जैसे बच्चे का संपूर्ण अंग पुष्ट होता है, उसी तरह गंगा के पानी से संपूर्ण समाज पुष्ट होता है। गंगा में पशु नहाते हैं, जो पशु पालक हैं, हमारे प्रदेश और उत्तर प्रदेश में जो गंगा के किनारे बसने वाले हैं, हमारे पशु गंगा में पानी पीते हैं, गंगा में नहाते हैं, गंगा में खेलते हैं, मैं तो अहीर हूँ, जब हमारे बच्चे भैंस लेकर जाते हैं तो दो-तीन घंटे तक भैंस गंगा में तोटती रहती है, पलटती रहती है और बच्चे गंगा में तैरते और खेलते रहते हैं। क्या दुनिया का कोई स्वीमिंग पूल में तैरने वाला उसका मुकाबला कर सकता है? ऐसी गंगा में जहां गंगा तट पर बसने वाले करोड़ों पशु पानी पीते हों, गंगा तट पर बसने वाले करोड़ों इन्सान जिसमें स्नान करते हों, उसका जल पीते हों और गंगा के पानी से उपजाऊ उर्वर भूमि में फसल लहलहाती हो, उस गंगा के बारे में अगर हमारी दृष्टि में गंगा की पवित्रता, गंगा की शुद्धता, गंगा के जल की धारा का प्रवाह और गंगा की निर्मलता को बनाए रखने पर अगर हम न सोचें तो हम समझते हैं कि अपने कर्तव्य का, राष्ट्र धर्म का हम निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। गंगा की धारा गंगोत्री से निकलती है और सागर तक जाती है। सतपाल महाराज जी ने इसके बारे में बताया। श्रीमान्, गंगा में जो स्वच्छता का अभियान चला, वह भी उसी से जोड़कर देखा कि जब गंगा का अवतरण भागीरथी ने किया, राजा सगर के कुल में भागीरथ जैसा पुत्र को पैदा किया, जो गंगा को अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए लाए थे। ब्रह्मा के कमंडल से गंगा निकलती है, गंगा को धारण करने वाला कोई नहीं है, स्वयं शिव गंगा को धारण करते हैं। कहते हैं कि गंगा से कहे, उतरो, मैं गंगा को धारण करूंगा और गंगा शिव की जटा में उलझ जाती है। फिर प्रार्थना करते हैं, तो जटा के एक तट को भगवान शिव निचोड़ देते हैं, उससे गंगा निकलती है। जिस तरह से गंगा ब्रह्मा के कमंडल से आकर और शिव की जटा में उलझ गयी थी, उसी तरह गंगा की स्वच्छता का अभियान सरकार की फाइल से निकलता है, लेकिन अफसरशाही के तंत्र के जाल की जटाओं में उलझकर रह जाता है। गंगा का स्वच्छता अभियान तकनीकी आफिसर, ठेकेदार, आदि के जाल में फंस कर रह जाता है लेकिन गंगा में कभी सफाई नहीं होती है। गंगा गंगोत्री से निकलती है, यमुना यमुनोत्री से निकलती है और हिमालय का इसलिए महत्व है कि भारत की संस्कृति का निर्माण और भारत की संस्कृति का उद्गम तथा भारत के धार्मिक ग्रंथों के जो काव्य हैं, उसकी रचना हिमालय से हुयी है और भारत की नदियों के किनारे से ही भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है।

17.00 hrs.

हम सभी नदियों के बारे में कहेंगे कि आप और हम जहां रहते हैं, हमारे यहां जितनी नदियां हिमालय से निकलती हैं, वे घूम-फिर कर गंगा में ही गिरती हैं। अगर वे सारी नदियां शुद्ध रहेंगी तो गंगा का जल भी शुद्ध रहेगा। गंगा की पवित्रता के साथ-साथ गंगा में मिलने वाली सभी नदियों की जल धारा पवित्र, स्वच्छ, निर्मल, स्वस्थकर और हितकर हो, सरकार को इन पर भी चिंतन करना चाहिए। सारे शहरों के सिवरेज का पानी गंगा जी, यमुना जी और अन्ये दूसरी नदियों में गिरता है। सभी सिवरेज का पानी निकाल कर गंगा-यमुना में गिराते हैं। मैं आप से प्रार्थना करना चाहूंगा कि शहरों के जितने सिवरेज के गंदे पानी नदियों में गिरते हैं उसे वाटर ट्रीटमेंट प्लांट के जरिए शुद्ध करें। वहां पर पम्पिंग सेट लगा कर आसपास के खेतों के लिए सिंचाई का प्रबंध कर दें तो उस पानी से हजारों-लाखों एकड़ जमीन की सिंचाई का काम भी हो जाएगा और गंगा एवं सभी नदियों की धारा पवित्र भी रहेगी लेकिन आप उस पर खर्च नहीं करेंगे क्योंकि आप उस योजना पर खर्च करेंगे, हजार-दो हजार करोड़ रुपये आप देते जाएंगे, जैसे गंगा में बाढ़ आती है, सभी गंदगी को ले जाती है और सागर में ले जाकर गिराती है। उसी तरह हजार-दो हजार करोड़ रुपये भी गंगा की धारा में बहा जाएगी। इसका कहीं कोई निशान नहीं रहेगा। कौन मूल्यांकन करेगा कि पैसा किधर से आया और किधर चला गया? सब गंगा के पेट में ही चला गया। इसलिए आप से मेरी विनम्र प्रार्थना है। मैं आप को सुझाव देता हूँ कि सभी शहरों के गंदे पानी को निकालने के लिए आप वाटर ट्रीटमेंट प्लांट लगाइए और उस पानी को नहर के द्वारा खेत में सिंचाई के लिए दीजिए। दूसरी बात यह है कि सभी कारखानों से गंदा पानी निकलता है और नदियों में जाता है।... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): यह पैसा दलालों के पेट में गया है। ... (व्यवधान)

17.02 hrs.

(Shri Francisco Cosme Sardina in the Chair)

श्री हुवमदेव नारायण यादव : वह तो कहते हैं कि पैसा गंगा के पेट में चला गया। जितने कारखाने हैं उन सभी का पानी नदियों में गिराते हैं। नदियों के किनारे-किनारे जब भारत में औद्योगिकरण हुआ तो सभी उद्योगों के पानी को नदियों में बिना यह सोचे गिराया गया कि इस नदी का हिन्दुस्तान के लोगों के साथ, अरोग्यता के साथ क्या संबंध है? इसलिए हमारी नीति वहीं गड़बड़ हो गई। मैं उस को शुद्ध करना चाहूंगा कि जितने उद्योग हैं जो गंगा और दूसरे नदियों में गंदा पानी गिराते हैं उन में से कितने पर आप ने कार्रवाई की है। आप ने कितने को पकड़ा है और कितने पर मुकदमा किया है? आप ने कितने कारखानों को बंद किया है और कितने कारखाना मालिक को जेल में बंद किया है? आप जवाब देते समय जरा बताइए तो हम समझ पाएंगे कि सरकार की इच्छा बलवान है। इसलिए आप से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि हिमालय को शुद्ध बना कर रखिए। हिमालय के आसपास के पेड़ कटते जा रहे हैं। माफिया लोग जाते हैं। पेड़ को काटते हैं और उन्हें उठा कर ले जाते हैं। वे पेड़ कहां जाते हैं? इस संसद में जैसे लगे हैं, बड़े-बड़े शहरों में जाइए, हर मकान में कंक्रीट की दीवार है और हर दीवार पर लकड़ी की एक दीवार लगाई गई है ताकि उसमें रहने वाले लोगों को गर्मी न लगे। हिन्दुस्तान के अंदर जो बड़े-बड़े समृद्ध एवं संपन्न लोग हैं वे हिन्दुस्तान के पहाड़ों को गंगा बनवाते हैं और उन लकड़ियों से अपने घर को सजाते हैं। मकान में नीचे फर्श होता है और उस फर्श पर लकड़ी लगाते हैं इसलिए कि जब फर्श पर चलेंगे तो आवाज नहीं होगी लेकिन लकड़ी पर चलेंगे तो मचामच बोलता है जिससे उनके स्वाभिमान को बल मिलता है कि वे कितने संपन्न हैं? इसलिए लकड़ी काटते हैं और हिमालय की मिट्टी कट कर नदियों में जाती है। भूमि का क्षरण होता है। नदि का पेट भरते हैं उसमें गाद आती है। गंगा की धारा भरती जाती है। आप पटना या वाराणसी में जाकर गंगा का हाल देखिए। गंगा शहर से दूर चली गई है। पहले गंगा पटना के नजदीक थी। पटना में हजारों-लाखों लोग गंगा के तट पर छठ व्रत मनाते हैं। उसमें सूरज को अर्घ्य देते हैं। आज गंगा शहर से दो किलोमीटर दूर चली गई है। अब गंगा की धारा नहीं है बल्कि क्षरण के कारण है। गंगा एक छोटी नदी बनती जा रही है। गंगा की धारा सूखती चली जा रही है। जिस दिन गंगा सूखेगी उस दिन भारत की संस्कृति सूखेगी। भारत का इतिहास सूखेगा। भारत के धर्म ग्रंथों के स्त्रोत सूखेंगे। भारत के जन-जन का प्राण सूखेगा। भारत के पशुओं के प्राण सूखेंगे। इसलिए गंगा की धारा को बचा कर रखिए जो भारत के मानव, पशुओं और नदी के किनारे बसने वाले लोगों का जान और प्राण है।

उसी तरह हमारी गंगा में भागलपुर के नजदीक पिरपैती से लेकर कहलगांव व भागलपुर में डॉलफिन हैं। उसे डॉलफिन क्षेत्र कहा गया है। गंगा में जो दर्शनीय चीज है, उसकी सुरक्षा के लिए कार्य कीजिए। झारखंड में भी साहबगंज के नजदीक गंगा में कटाव है। जहां भी जाइए, गंगा की धारा में जो कटाव होते हैं, उनसे लोग पीड़ित होते हैं। उन्हें बचाइए।

मैं एक बात कहना चाहूंगा। मेरे 4, विशम्बरदास मार्ग में कोठी की मरम्मत हो रही थी।...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : जब बांध बनते जा रहे हैं, आप गंगा की धारा बोल रहे हैं, गंगा की धारा कहां से आ रही है।...(व्यवधान)

श्री हुवमदेव नारायण यादव (मधुबनी): मैं अपनी बात बोलूंगा।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Hon. Members, please do not disturb him.

...(Interruptions)

श्री हुवमदेव नारायण यादव : मैं वो सूना हूँ जो अपने आप बोलता हूँ। मैं नहीं कहता कि बोल तोता राम, सीताराम।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

...(Interruptions)

श्री हुवमदेव नारायण यादव : मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब लेकेदार कचरा लेकर रात में जा रहा था, तो मैंने पूछा, शर्मा जी, आप यह कचरा कहां फेंकते हैं। उन्होंने कहा कि यमुना जी में फेंकता हूँ। हमने कहा, कैसे? रात में नहीं फेंकेगे तो दिन में कैसे फेंकेगे। यमुना जी में तो रोक है। उसने कहा कि 20-25 रुपये पर ट्रक पुलिस वाले को देते हैं और सब कचरा यमुना जी में फेंकते हैं। यमुना की सफाई के नाम पर हजारों, करोड़ों रुपये की योजना बनाएं और रातभर सम्पूर्ण दिल्ली का कचरा, तीन सौ, चार सौ ट्रक कचरा यमुना जी में फेंकते जाओ। रात में कचरा फेंको और दिन में कचरा निकालो। यही दुनिया का खेल है। चढ़ते रहो, उतरते रहो, उतरते रहो, चढ़ते रहो, तोड़ते रहो, फोड़ते रहो, नया बनाओ, पुराना खोदो। इसी खेल में भारत की सारी पूंजी चली जाती है। इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि भारत की जितनी भी नदियां हैं, उन सब नदियों की स्वच्छता के लिए, उनके स्रोत निरंतर चलते रहें, उसके लिए कार्य कीजिए। नदियों में बाढ़ रोकने के नाम पर जितने तटबंध बनाए गए हैं, उन तटबंधों के कारण सम्पूर्ण पहाड़ की जो मिट्टी आती है, वह गाद बनकर नदी के पेट ऊंचे हो गए हैं। नदी ऊंची है और जमीन नीची है। जितने भी तटबंध हैं, उनके कारण नदियों का पानी रुका है जिसके कारण विनाशकारी बाढ़ आने लगी है। इसलिए तटबंधों से नदियों को बचाइए।...(व्यवधान)

मैं अपनी वाणी को समाप्त करते हुए आपको धन्यवाद दूंगा और रेवती रमण जी को भी धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने गंगा पर बहस चलाई है। मैं सदन से प्रार्थना करता हूँ कि कोई भी हो, चाहे कहीं भी हो, एक राष्ट्रीय नीति बने, राष्ट्रीय आधार बने, राष्ट्रीय नदी का इतिहास लिखा जाए। हमारे पास आज किसी नदी का इतिहास नहीं है। नदियों के किनारे कितनी संस्कृतियां बनी हैं, कैसे विकसित हुई हैं, अगर भारत में नदियों और हिमालय का इतिहास लिख दें तो हम इस राष्ट्र का बहुत बड़ा कल्याण करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ और सरकार से मांग करता हूँ कि गंगा मैया, गीता माता और गाय माता, ये तीन माता हैं। कृष्ण गीता वाले तब हुए जब उनके साथ गाय थी। कृष्ण के हाथ में गीता है। अगर कृष्ण के मुँह में गीता का ज्ञान है तो कृष्ण के दोनों हाथ गाय के थन पर हैं। जो गाय का दूध निकालता है, पीता है, बलवान बनता है। कुरुक्षेत्र में जाता है, धर्म की रक्षा करता है। केवल गीता ही नहीं, गीता के साथ गाय बचे, गंगा बचे, धरती माता भी बचे, तब भारत का कल्याण होगा।

डॉ. बलीराम (लालगंज): सभापति महोदय, आपने मुझे गंगा के बारे में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। इतिहास इसका गवाह है कि जो गंगा है, भगीरथ के लाखों प्रयास के बाद गंगा का अवतरण हुआ।

यहां पर लोगों ने तमाम तरह के गीत गाये कि 'हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है।' हम लोग बिल्कुल गंगा नदी के करीब रहने वाले हैं। मेरे लगभग 15-20 साल वाराणसी में गुजरे हैं। हम गंगा में बराबर स्नान करते रहे हैं। लेकिन आज जब हम गंगा की हालत को देखते हैं, तो उसमें जो धाराएं बहुत अविश्वसनीय गति से बहती थीं, अब वे धाराएं नहीं रह गयी हैं। आज सरकार, विश्व बैंक और तमाम सरकारी अनुदान से उसके शुद्धिकरण की बात हो रही है कि गंगा के जल को कैसे शुद्ध किया जाये? जब गंगा में पानी ही नहीं रहेगा, तो किस चीज को शुद्ध किया जायेगा और कितना उस पर पैसा लगाया जायेगा?

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ कि सरकार को इस पर गंभीरता से पहल करनी चाहिए कि गंगा का पानी इधर क्यों नहीं आ रहा, उसकी अविश्वसनीय धारा क्यों नहीं बह रही? अभी श्री रेवती रमण सिंह जी ने कहा कि उत्तराखण्ड में तमाम बांध बनाकर पानी को रोका जा रहा है। इसलिए जब-जब यहां के लोगों ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है, तब-तब उसका खामियाजा पूरे देश को, सब लोगों को भुगतना पड़ा है। आज प्रकृति के साथ खिलवाड़ हो रहा है, धारा बदली जा रही है। हिमालय जितनी लंबी चोटी किसी की नहीं है। आज उसे भी धराशायी करने का प्रयास किया जा रहा है। इसलिए इससे देश की क्षति हो रही है, लोगों की क्षति हो रही है। आज स्थिति ऐसी आ गयी है कि जब गंगा का उधर से जल नहीं आ रहा है, तो इधर गंगा का जो जल स्तर है, वह बहुत नीचे चला गया है। लोगों को पीने का पानी नहीं मिल रहा है। आज लोग प्रदूषित पानी पी रहे हैं, जिससे तमाम तरह की भयंकर बीमारियां पैदा हो रही हैं।

सभापति महोदय, हमारी सरकार में श्री जयराम रमेश कैबिनेट मंत्री रहे हैं। जिस तरह से बांध बनाकर गंगा के पानी को रोका जा रहा है, उन्होंने इसके खिलाफ बोलना शुरू, एक जेहाद छेड़ा। गंगा प्रदूषण बोर्ड, जो प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में बना था, हमें लगता है कि उसके कारण उन्हें इस पद से हटाया गया, उनका मंत्रालय छीना गया, ताकि वे इस तरह की आवाज न उठाएँ। आज जो व्यक्ति सही बात उठायेगा, उसे हटा दिया जायेगा। उसके खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। उनका विभाग बदल दिया गया। उन्होंने अच्छी-अच्छी बातें कही हैं। केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमेश ने कहा कि देश में जिस रफतार से जंगल काटे जा रहे हैं, उसे देखते हुए कई राज्यों में एक बार फिर विप्लव आंदोलन शुरू करने की जरूरत है। इसके अलावा जो गैरकानूनी खनन हो रहा है, उस गैरकानूनी खनन से हमारा पर्यावरण पूरी तरह से प्रभावित हो रहा है।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहूंगा कि जो उत्तराखण्ड की सरकार है, जिसकी तमाम ऐसी लंबित परियोजनाएं हैं, जो बांध बनाने की हैं और आज जो बांध बने हुए हैं, उस पर प्रतिबंध लगाना चाहिए, जो निर्माण कार्य हो रहा है, उसे रोकना चाहिए ताकि जो पानी हिमालय से निकलकर, गंगोत्री से निकलकर मैदानी इलाकों में आता है, वह बाधित न हो। उत्तर प्रदेश के लगभग दो दर्जन ऐसे शहर हैं, जो गंगा तट पर बसे हुए हैं और उसका लाभ उनको मिलता है, इसलिए आप सरकार से कहें कि सरकार इस तरह का कदम उठाए ताकि वे जो तमाम बांध बन रहे हैं, न बनें जिससे यहां के लोगों को पर्याप्त मात्रा में जल मिल सके। पूरे बनारस में गंगा का ही पानी पीते हैं, इसी तरह से इलाहाबाद में है। इलाहाबाद में जब कुम्भ लगता है, तो कभी पानी लाल हो जाता है, कभी पीला और कभी काला हो जाता है, वहां पर लोग आंदोलन करते हैं, वे लोग वहीं का पानी पीते हैं, उनके पास इतने संसाधन नहीं हैं कि हैण्डपम्प का पानी पिएं। जब जल का प्रवाह तेज रहेगा, तो प्रदूषण भी कम हो जाएगा, लोगों को स्वच्छ पानी पीने के लिए मिलेगा क्योंकि पहाड़ों से आने वाला पानी तमाम जड़ी-बूटियों से निकलकर आता है, उसमें तमाम औषधियां रहती हैं, जैसा कि रेवती रमण जी ने कहा, अगर गंगा के जल को अगर साल भर भी किसी बर्तन में बंद करके रखा जाए, तो भी उसमें कोई कीटाणु नहीं पैदा होता है। इसका कारण यही है कि हिमालय से जो पानी तमाम पर्वत, पहाड़ों से निकलकर आता है, उसके साथ जड़ी-बूटियां आती हैं, उससे हर मानव को फायदा मिलता है। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उत्तराखण्ड की सरकार को इस तरह की सलाह दें कि जो ऐसे तटबंध बना रहे हैं, बांध बना रहे हैं, उनको तत्काल रोकें।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): महोदय, रेवती रमण जी और सभी साथियों द्वारा कही गयी बातों को विस्तार नहीं देना चाहता हूँ, लेकिन जो हालात हैं, वे इतने विकट हैं कि विकास का रास्ता जब से हमने पकड़ा है, विकास से कहां दुनिया में क्या हुआ, वह मैं नहीं जानता, लेकिन हिन्दुस्तान में इस विकास से और इस विकास की नकल से भयावह स्थिति हो गयी है। हिमालय कच्चा पहाड़ है, दुनिया में सबसे ज्यादा ऊंचा पहाड़ है, लेकिन सबसे कच्चा पहाड़ है। सीरिमक एरिया है यानि भूकम्प का सबसे ज्यादा खतरा हिमालय में है। हिमालय बन रहा है, अभी भी निर्माण के रास्ते पर है। एक इंच, दो इंच, तीन इंच हिमालय बढ़ रहा है, दोनों जो आपके भूखण्ड हैं, भारतीय भूखण्ड से और चीनी भूखण्ड से टकरा रहा है। लाखों वर्ष पहले साउथ अफ्रीका से कटकर यह यहां आया और प्लेट करते-करते यह हिमालय बना है। अकेले हिमालय नहीं बना, यह जो उत्तर भारत का सबसे ज्यादा जरखेज इलाका है, वह हिमालय की गाद से बना है। उसकी खाद से बना है। हिमालय जो है और गंगा जो है, अकेले नदी नहीं है। हिमालय से, चंबल को और नर्मदा को छोड़कर, सारे भारत की नदियां गंगा में जाती हैं। सोनगंगा आती है, अमरकंटक भी है। ये सब गंगा से ही आई हुई नदियां हैं और अरब की खाड़ी में चली जाती हैं। हालात यह हैं कि जिन लोगों ने यहां गंगा का और हिमालय का वर्णन किया, उसे छूने की बात तो दूर, आपने जो टिहरी बांध बनाया है, नरोरा को भी छोड़ दें, लेकिन जो यह टिहरी बांध बनाया है, उसकी क्या परिकल्पना आपने की थी, क्योंकि न तो आपके पास पर्याप्त साधन थे, न सम्पत्ति थी और न ही इतनी कूवत थी... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions) अ€! *

श्री शरद यादव : जगदम्बिका पाल जी ठीक कह रहे हैं कि नदियां मर रही हैं और आप गंगा एक्सप्रेस वे बना रहे हैं। आने वाली पीढ़ी उस पर चल नहीं पाएगी।

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, please do not get distracted. Please address the Chair.

श्री शरद यादव : हिमालय से कितनी ही नदियां आती हैं, मैं उस इलाके का रहने वाला नहीं हूँ, लेकिन जिस जगह से गंगा जाती है, मैं उस प्रदेश से यहां आता हूँ। मंदाकिनी के बारे में यहां कई साधियों ने बताया कि उसकी धारा ही मरने वाली है, हिमालय में जो कच्चे पहाड़ हैं, आप वहां टनल बनाएं तो जो लोग उस इलाके में बसे हुए हैं, आप जाकर देखें कि किस तरह से उनके घर दरक गए हैं, उनमें दरारें पड़ गई हैं। पृथ्वी के नीचे दो चट्टानों के टकराने से भूकम्प आता है, लेकिन वहां तो स्थिति और भी खराब हो रही है। लोग तो मरेंगे ही, लाशों में तब्दील तो होंगे ही, लगता है कि देश ही लाश बनकर रह जाएगा। गंगा अगर नहीं बचेगी तो फिर देश कैसे बचेगा...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. Please do not disturb him.

*(Interruptions) â€/**

श्री शरद यादव : सभापति जी, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इस प्रकार बीच में व्यवधान पैदा करने से मेरा समय नष्ट हो रहा है इसलिए आप कृपया इतनी जल्दी समय समाप्ति सूचक घंटी न बजाएं। मंदाकिनी, अलकनंदा, यमुना, गोरी गंगा, काली गंगा, शारदा, धौली गंगा, पिंडहर, राम गंगा, विनार से लेकर रावी तक देश की दो तिहाई नदियां अकेले हिमालय से गर्भ से निकलती हैं, उसकी बर्फ से पैदा होती हैं। आप उस पहाड़ पर टनल बना रहे हैं, वहां बांध बना रहे हैं कि पानी दिया जाएगा, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि पानी देना आपके बस का नहीं है, यह सम्भव नहीं है। आप कहते हैं कि बिजली मिलेगी इसलिए डैम बना रहे हैं। मैं पर्यावरण मंत्री जी को बताना चाहता हूँ कि पूरे देश की बिजली में से सिर्फ एक फीसदी बिजली का उत्पादन वहां से हो रहा है।

जो गंगोत्री है, वहीं पर इतना प्रदूषण हो गया है और तबाही मचाई गई है कि जैसा हमारे मित्र ने कहा कि कोई व्यक्ति अगर मुर्दे को जलाने के लिए वहां से शुद्ध पानी लेकर आए, तो वह भी नहीं मिल पाता है। वहां आसपास की बरितियां उजड़ गई हैं।

उत्तराखंड राज्य में हमारे मित्रों की सरकार है। उत्तराखंड से आने वाले माननीय सदस्य सतपाल महाराज जी अभी सदन में नहीं हैं, वह अपने भाषण में आधुनिकता और विज्ञान के विकास की बात कर रहे थे, जो यूरोपीयन देशों और अमेरीका ने कल्पना की थी। मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि इन लोगों ने तो 300 साल तक लोगों को लूटा है। उनकी कल्पना सही है इसलिए वह उस कल्पना को यहां रख रहे थे।

उत्तराखंड बन गया तो केवल क्या बिजली से चलेगा, यह बिल्कुल मानने वाली बात नहीं है। ...(व्यवधान) मैं तो माननीय सतपाल महाराज जी का इंतजार कर रहा था। मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि यह जो हिमालय के साथ सब तरफ छेड़खानी चली हुई है, कश्मीर से लेकर ठीक असम तक और उसमें भी हम सबसे ज्यादा गंगा के साथ छेड़खानी कर रहे हैं। गंगा की हमने भ्रूण-हत्या कर दी है तो गंगा बचेगी कैसे? लोग कह रहे हैं कि गंगा नाला बन गयी है, उसे हमने नाला बना दिया है, हमने-आपने गंगा का अपने हाथ से गला दबा दिया है, गर्भ में हमने उसकी जान ले ली है तो गंगा कैसे बचेगी? मैं कहता हूँ कि दुनिया की बड़ी सभ्यताओं में एक सभ्यता गंगा-किनारे की है, गंगा के चलेते हैं। दुनिया की जितनी सभ्यताएं हैं वे सभी नदियों के किनारे बसी हैं। आज भी देश के सारे शहर चाहे गंगा के किनारे हों, चाहे कावेरी के किनारे हों या नर्मदा के किनारे हों। वह केवल नदी नहीं होती है वह वाटर लेवल भी ऊंचा-नीचा करती है और केवल नहाने के लिए, पीने के लिए ही पानी नहीं देती है वरन् वह पूरे इलाके के वाटर-लेवल को भी ठीक करती है। धरती के नीचे जो जल की एक परत समुद्र की होती है और मैंने बहुत पहले पढ़ा था कि गंगा का मैदान जो है वहां अर्थ-सी है यानी धरती का समुद्र कहीं दुनिया में है तो गंगा के बेसिन में है। मैं जब जेल में था तो मैंने एक किताब पढ़ी थी कि गंगा का मैदान दुनिया में ऐसा मैदान है जिसमें अर्थ-सी है, उस पर आप बांध बना रहे हो। कूवत और सलीका आपको है नहीं और भ्रष्टाचार का ऐसा हाल है कि ठेकेदारों को आपने काम दे दिया। मंदाकिनी और गंगोत्री को खत्म करने के लिए ठेका टुकड़ों-टुकड़ों में दे दिया। ठेकेदार पूरे विभागों को बेवकूफ बनाकर के, घूस देकर के काम कर रहे हैं, उन्हें एनवायरनमेंट से क्या मतलब है? वे तो कह रहे हैं कि अपनी जिंदगी को सुकून में डालो, देश और आने वाली सभ्यता का नाश होता हो, उनकी बला से हो।

मान्यवर, अगर सभ्यता का विनाश अगर कहीं से होगा तो हिमालय से होगा क्योंकि यह ग्लेशियर पिघलेगा और समुद्र बढ़ेगा, उछलेगा और मुम्बई से लेकर गोवा तक कुछ बचने वाला नहीं है, हिमालय की छेड़खानी हिंदुस्तान को तबाही के कगार पर ले जाएगी। जो सवाल लोगों ने उठाया है, उसे मामूली मत मानिये, माननीय रमेश जयराम जी की बात बाहर चल रही थी। वे जेएनयू में बोल रहे थे। उन्होंने थोड़ा बहुत जो किया पारको के लिए किया, वेदांता के लिए और एक मुम्बई में है सलवासा, लेकिन उसका कुछ हुआ नहीं केवल घुड़की मारते रहे। लेकिन माननीय नटराजन जी घुड़की भी नहीं मारेंगी, ये बड़ी डिस्प्लेन्ड हैं। लेकिन एनवायरनमेंट का मामला किसी सूबे या उत्तराखंड का मामला नहीं है, हिमालय किसी सूबे की सम्पत्ति नहीं है, हिमालय नहीं बचेगा तो यह पूरा का पूरा भूखंड, भारत और बर्मा से लेकर लंका तक का पूरा इलाका तबाही से बचेगा नहीं।

समुद्र के किनारे बसे हुए सभी इलाके तबाह होंगे। मैं सरकार से कहना चाहता हूँ कि पहाड़, नदी, नाले, जमीन, हवा के बगैर दुनिया नहीं चलती है। इनकी तबाही के बाद सभ्यता नहीं बचेगी। मुझे नहीं लगता है कि यह सभ्यता पचास-साठ वर्ष से ज्यादा रहेगी। हम विनाश के कगार पर खड़े हैं और हमने विनाश को इतने करीब कर लिया है कि हम हिमालय में सुंग खोद रहे हैं। हम हिमालय के पेट को चीर रहे हैं। सुंग पर सुंग निकाल रहे हैं। वहां जो आविष्कार हुए हैं, आप उन आविष्कारों को यहां लागू नहीं कर पाओगे। भारत सरकार तथा पर्यावरण मंत्रालय को तत्काल, अविलम्ब अभी वहां जाना चाहिए और ऐसे कामों को रोकना चाहिए। जयराम रमेश जी ने कुछ कामों को रोका था। मेरे इलाके बांधवगढ़ में, जहां शेर रहते हैं, मध्य प्रदेश में वहां एक नदी पर बिजली बनाने की परियोजना है। बांधवगढ़ के जंगल को काट कर बनाने की योजना है। उन्होंने वहां अपने अफसरों का अमला पहुंचाया है। वहां आपको स्वयं देखना चाहिए कि उत्तराखंड के जो निवासी हैं, जो गंगा के किनारे बसे हुए हैं, वे कितनी दिक्कत से रह रहे हैं। मंदाकिनी नदी, रामगंगा नदी के किनारे बसे लोगों की जिंदगी को देखिए। उनके पास दो खेत हैं, एक कमरा है, वे किस तरह से बेचैन हैं और किस तरह से विल्ला रहे हैं, लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। आपने गंगा प्राधिकरण बनाया है। मैं सरकार से पूछता हूँ कि इसका आफिस कहां है? इस आफिस में कौन-सी दर्यास्त और कौन-सी शिकायत को कौन सुनता है? प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्रीय नदी कहा है। आपने इसे राष्ट्रीय नदी घोषित किया है, तो क्या इस नदी को बचाने का काम शुरू होगा या नहीं होगा। नदी को नीचे से बचाने का काम तो बाद में होगा, लेकिन पहले जहां से नदी का उद्गम होता है, जहां नदी के प्रण हैं, जहां से जीवन आ रहा है, वहां से पहले ठीक किया जाना चाहिए। यदि स्रोत ही बंद हो गया, तो नीचे से नदी कहां से ठीक कर पाओगे। हिमालय की नदियों के स्रोत खत्म हो गए, तो आप हिंदुस्तान की जो दो-तिहाई आबादी है, इलाका है, आप उसे बचा नहीं पाओगे। जब ये नहीं बचेगा, तो हिंदुस्तान की सभ्यता की बात छोड़िए, इसके कौन-से ग्रंथ, कहां हैं, कहां लिखे हैं, उनका क्या किस्सा है, कोई सुनने वाला नहीं है, देखने वाला नहीं है। अभी तो हम हिंदुस्तान को किस तरह से बचाएं, यह सोचने की जरूरत है क्योंकि हिमालय के साथ इसका मामला जुड़ा हुआ है। हिमालय बचेगा, तो हिंदुस्तान बचेगा और हिमालय अगर खत्म होगा, तो हिंदुस्तान बच नहीं सकता है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

SK. SAIDUL HAQUE (BARDHMAN-DURGAPUR): Mr. Chairman, thank you for giving me a chance to speak on this important subject. The Himalaya and the Ganga are of immense importance to the nation. But, of late, the hazardous environment of the Himalayas and the Ganga are posing a serious problem to the country. Because of global warming and climate change, the fast receding Himalayan glaciers have a common cause of concern to everybody.

You know that the Department of Science and Technology revealed that the Himalayan glacier is receding by 17 meters per year. The United Nations Environment Programme Report of 2008 says that the way the Himalayan glaciers were melting, it would disappear in the next few decades endangering a large part of life. That is why, we have to show more concern about it.

What is of more concern is that ecologically fragile environment of the Himalayas is under grave threat from big dams, deforestation and mining activities. Besides large scale construction of dams, roads, tunnels, buildings and other public utilities, combined with indiscriminate mining and quarrying, has also contribute to the fragility of the Himalayan ecology, creating an environmental imbalance in the total region. Being stripped of the protective vegetative cover, that is, because of deforestation, the Himalayan soils are fast losing their capacity of absorbing rain water. So, landslides, earthquakes and other mass movements are severe environmental hazards in the total Himalayas.

Now, coming to the Ganga, we know that the Ganga is now under great threat of pollution. Nearly one billion litres per day of domestic waste goes directly into the River along with thousands of animal carcasses. Another 260 million litres of industrial waste is added to this by the hundreds of factories along the river banks. As a result of that, we are now facing the great menace of pollution which brings with it the water-borne diseases, including cholera, hepatitis, typhoid and dysentery. The sacred practice of depositing human remains in the Ganga also poses health threats. An inadequate cremation procedure contributes to a large number of partially burnt or unburnt corpses floating down to the Ganga. The major polluting industries are the leather industries, especially those in Kanpur, and also the pharmaceutical, electronics, textile and paper industries and tanneries.

In 1996, the Supreme Court had banned the discharge of effluents from various tanneries and factories located on its banks in Kanpur and in the Ganga basin, but that has not been followed properly and no action has been taken. Another matter of great concern is construction of buildings in an unplanned way in the Ganga basin, and thereby illegally grabbing the embankments of the Ganga. It is also posing a threat to the very existence of the Ganga.

Illegal mining in and around the Ganga basin, particularly in Haridwar, is also posing danger to the river bank and the riverbed. On July 19, 2011, a Central Pollution Control Board report on the quality of water in Bhagirathi River warns of an increase in pathogenic contamination.

The Ganga Action Plan was initiated in 1985 which was devised to clean up the river in selected areas by installing sewage treatment plants and threatening fines and litigation against the industries that pollute it. Almost Rs. 1,000 crore have been pumped in Ganga Action Plan Phase I and Phase II between 1985 and 2000, but the River is still sullied. Also, there is large scale corruption. No action has been taken properly. That is why, the Government has constituted National Ganga River Basin Authority, based on the report of the IIT.

The matter which is of grave concern is that CAG has sent a report to the Government on April 1, 2010 telling that there would be no water in the long stretches of the famous Alaknanda and Bhagirathi riverbeds if the Uttarakhand Government goes ahead with its plan to build 53 power projects on these two rivers, which join the Ganga. A CAG Inspection Report also tells that as a result of that, the villages settled along the river basin will be uprooted once the river goes dry, leading to mass migration and cultural erosion. According to a report published in *India Today*, a plan to produce electricity in the Himalayas to ease power situation in the plains would make Ganga disappear in the valley of its origin.

Now, the barrage which has been made in Farakka, is not being maintained properly. One lock-gate has been broken and a lot of water is going out. The Government is taking no notice of that. If no proper action is taken, that will pose a great danger. As a result of that, I appeal to the Government to look into all these aspects because Himalayas and Ganga are having a greater role in the development of economy - in the health sector, in the agriculture sector, in the socio-economic sector. If we do not give proper attention to it and do not take proper action, it will not bring out any result. Hence, I appeal to the Government to look into the whole matter and take appropriate action.

With these words, I conclude.

श्री लालू प्रसाद (सारण): सभापति महोदय, माननीय मुलायम सिंह यादव जी प्रेरणा से श्री रेवती रमण सिंह ने बहुत बड़े पवित्र विषय पर सरकार और सबका ध्यान आकर्षित किया है। यह निर्विवाद सत्य है कि गंगा देश की सबसे लम्बी नदी है और गंगा का जल अमृत समान माना जाता था, अब नहीं माना जा रहा है। लेकिन मनुष्य जाति ने और हम सभी लोगों ने गंगा और यमुना के जल को बिल्कुल दूषित बना दिया है, हम इनमें नर्क फेंक रहे हैं। हमें न जाने कितने हजार करोड़ रुपये यमुना मैया की सफाई और गंगा एक्शन प्लान के लिए मिले। लेकिन इन नदियों में होम पाइप डाल दिये गये। पानी के रस्-रखाव और निकासी के लिए अंदर की तरफ ट्रीटमेंट प्लांट लगा दिये गये। यदि इसकी जांच हो तो बड़े-बड़े लोग जेलों में चले जायेंगे। हम उम्मीद करते हैं कि यदि लोकपाल बन जाता है तो अण्णा हजारे जी इसकी जांच करायेंगे। आज ये हालात हैं। आज चमड़े की फैक्टरी का पानी, कैमिकल्स, नालियों का पानी, घरों का पानी और सारा नर्क समान पानी गंगा और यमुना में जा रहा है।

अभी बांध के बारे में चर्चा हुई, उत्तराखंड सरकार ने बिजली पैदा करने के नाम पर बांध बनाया, पानी को ऊपर रोक। सभी माननीय सदस्यों ने इस सवाल को उठाया है। यदि हम गंगा को पवित्र बनाना चाहते हैं तो हमें इन बांधों को ध्वस्त करना चाहिए। गंगा की पवित्रता को नकारा नहीं जा सकता है। मेरे बिहार में मनेरी एक स्थान है, जहां रामायण तिवारी थे, श्री शत्रुघ्न सिंहा जानते होंगे। वह फिल्मों में काम करते थे, भोजपुरी जगत में उनका स्थान था। उन्होंने एक फिल्म बनाई थी 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इवो, सैयां से कर दे मिलनवा हो राम।' यह फिल्म रामायण तिवारी ने गंगा मैया की पवित्रता के नाम पर बनाई थी। हमारी महिलाएं, मां-बहनें आस्था में गीता गाती हैं 'गंगा मैया मैं जब तक ये पानी रहे, मेरे सैयां तेरी जिंदगानी रहे।' लेकिन आज पानी सूख रहा है और पति धीरे-धीरे दम तोड़ रहे हैं। यह हालत हम लोगों ने बना दी है। ये सारी बातें बेकार साबित हो रही हैं।

अभी शरद जी ने कहा कि हिमालय को बचाना जरूरी है। हां, बिल्कुल बचाना है। लेकिन चीन ने आगे बढ़-चढ़कर सिक्स तेन रोड अरुणाचल प्रदेश तक बना ली है। उसने हिमालय में यह रोड बनाई है, जहां मानसरोवर में हमारे देवताओं के महादेवता श्री शंकर भोले विराजमान हैं। उन्होंने हिमालय को तोड़कर पूरी जगह को अपने कब्जे में ले लिया है। चीन ने पहले से ही हमारी जमीन को दबाकर रखा है।

मैं हाल ही में मथुरा गया था, जहां दक्षिण भारत के लोग और हम लोग नदी पार करके गये, वहां एक जगह पूजा-पाठ हो रहा था। वहां का पानी बिल्कुल जहरीला है, उसी में लोग खड़े होते हैं और पूजा कर रहे हैं। आज हमने गंगा और यमुना की क्या हालत बनाकर रख दी है। बांध तो बांध हैं, लेकिन गंगा में जो नदिया मिलती हैं, जिनमें सरयू, घाघरा, बागमती, अदवाय, बूढ़ी गंडक, सोन नदी प्रमुख हैं। सोन नदी मध्य प्रदेश से निकलकर जाती है, उसके बारे में आप सब लोग जानते हैं, यह अमरकंटक से निकलकर जाती है। ये सारी नदियां गंगा में विलय होती हैं, मिलती हैं। लेकिन आज गंगा नदी बिल्कुल सूख रही है। श्री रेवती जी ने ठीक कहा कि जो इसका पाठ था, गंगा की चौड़ाई थी, वह सूख रही है। लेकिन यह क्यों सूख रही है, इस पर हम लोगों को विचार करना चाहिए और सोचना चाहिए। हम लोगों ने कितना बड़ा घात किया है, कितना बड़ा अन्याय किया है। ग्लेशियर तो ग्लेशियर हैं, इनमें गेक-अप करने के लिए खास सीजन में पानी आता है। जब रेनी सीजन होता है, बरसात का समय होता है, तब बारिश का पानी हिमालय की जड़ी-बूटियों से बीच से बहता हुआ गंगा के रूप में आता है। गोमती, घाघरा आदि नदियां गंगा में विलय करती हैं, उसके बाद गंगा कोलकाता होकर गंगासागर में चली जाती थी।

क्या जुलम हुआ है, कितना अन्याय किया गया है। अगर दूसरा देश होता तो लोगों को सख्त सजा दी जाती। हमारा सारा पानी बंगलादेश को दे दिया गया तो गंगा क्यों नहीं सूखेगी? गंगा में लाखों की संख्या में अंतर्राष्ट्रीय पक्षी, साइबेरियन बर्ड्स आते थे, डॉल्फिन आते थे। हुवमदेव जी बता रहे थे कि भागलपुर, पटना में डॉल्फिन आते थे। उस समय जब हम लोग गांवों से आते थे तो हम लोग डॉल्फिन देखते थे। हम लोग कहते थे कि यह सोंस है। यह डॉल्फिन आज नाष्ट हो रही है। अगर भारत सरकार में दम है तो आप उस चिड़्डी को ओपन कीजिए और वह संधि तोड़िए जिसके द्वारा आपने बंगलादेश को पानी दान कर दिया है। फरवका के किनारे से लेकर सूपी तक लाखों-करोड़ों मछुआरे हैं वे आज भुखमरी और बेकारी के कगार पर खड़े हैं। न जाने कितने लोगों ने नावों को लेकर इसके लिए संघर्ष किया है। इसको कोई देखने और सुनने वाला नहीं है। गंगा माँ का पेट जो विभिन्न तरह की मछलियों से भरा रहता था, आज उसमें मछलियां नहीं हैं। जब ब्रीडिंग सीजन होता था, मछली का चरित्र अण्डा देने का होता है, वह उल्टी धार पर चढ़ती है, ब्रीडिंग करती है। समुद्र से विभिन्न तरह की मछलियां आती थीं और ब्रीडिंग करती थीं। हमारी नदियां और खेत-खलिहान मछलियों से भरे रहते थे। आज सारे मछुआरे बेकार पड़े हुए हैं। इतनी खतरनाक दौरी कर दी और गंगा का पानी दान कर दिया। लोगों ने इस देश के भूगोल और नदियों को खण्ड-खण्ड कर दिया। एक तरफ तो बांध में बांध कर अटकाए हुए हैं और दूसरी तरफ दान कर दिया है तो बरसात में सारा पानी निकल जाता है। माननीय सदस्य बोल रहे थे कि बहाव नहीं है, करंट नहीं है, यमुना में नहीं है। कहां से आएगा? वह तो वॉटर लॉगिंग हो गया है। इधर से नाले का पानी जा रहा है, उसने गेट बंद कर लिया है। जब आपका अमृत जल आएगा तब वह गेट खोलेगा। जब बरसात शुरू होगी तब गेट खुलेगा। सारा पानी हम दान करते जा रहे हैं और पानी वहां चला जा रहा है। एक तरफ मछुआरे बेकार हो रहे हैं और दूसरी तरफ हमारे खेत-खलिहान बेकार हो रहे हैं। किशनगंज से होकर जो ब्रह्मपुत्र आती थी वहां चीन दावा कर रहा है कि इस नदी को हम रेन्युटेब करेगे और हम इस इसका इस्तेमाल करेंगे। भारत सरकार चलाने वाले लोगों को सोचना चाहिए कि बिना किसी से पूछे हमने यह दौरी कर दी और पानी को दान कर दिया। यह सब बिना किसी चर्चा के, बिना सर्वदलीय बैठक किए कर दिया गया। मौजूदा सरकार ने नहीं, इसके पहले जो सरकार थी उसने किया। हमारे अफसर क्या कर रहे थे, हमारे ब्यूरोक्रेट्स क्या कर रहे थे? इन्होंने भाविष्य के खतरों को नहीं समझा और नदी सूख गई। शत्रुघ्न जी, गंगा आरती के लिए हम घाट पर जाते थे, वहां एक मंच बनाया हुआ है, वहां पर पानी ही नहीं है। आप पैदल गंगा को पार कर जाइए लेकिन वहां पानी ही नहीं है। गंगा की यह हालत बना कर रख दी है। बूढ़ी गंडक, बागमती आदि नदियां जो नेपाल से आ कर गंगा में मिलान करती थीं उन सब का नाश कर के छोड़ दिया है। आपकी सरकार को इसे देखना चाहिए।

देश हित में हमारी इस नदी के पानी को बचाइये और इस दौरी को तुड़वाइये, इसकी कोई जरूरत नहीं है। यह दौरी देश के खिलाफ है। गेट खुलवा दिया, फिर गेट बंद कर लिया, पानी कहां है, पानी जा रहा था, पानी अपने जिम्मे ले लिया, एक मछली नहीं, एक सिंगरी नहीं, एक बोवारी नहीं, एक रोहू नहीं, मछुआरे बेचारे दिन भर जाल फेंक रहे हैं, लेकिन जब वह जाल निकालकर देखता है तो उसमें कोई मछली नहीं फंसती है। मछली कहां से आवेगी? इसका असली कारण यह है। मैडम आप इसे स्टडी कीजिये, इस दौरी को निकालिये, अगर आपका जूनिस्टिडवशन है, अगर आपके विभाग में यह बात है तो आप इसे निकालकर पढ़िये। बांग्लादेश को पानी दे दिया, फरवका के माध्यम से गेट खुल गया। उस समय गेट खोल दिया गया, आप जाकर देखिये, पानी चला गया, हुवमदेव जी पानी भीतर और ताला बंद, कहां से

पानी आयेगा, कहां से करंट आयेगा? नरक का पानी वहीं ज्यों का त्यों जमा हुआ है। यमुना को मां यमुना कहते हैं। जब कृष्ण भगवान को छिपाया जा रहा था, वासुदेव जी उन्हें टोकरी में लेकर जा रहे थे, वे यमुना नदी को क्रॉस कर रहे थे, यमुना की महिमा, गंगा का उफान, न जाने बरसों-बरसों से हमारी यमुना मैया तालाबित थी कि कब कृष्ण जी पधारेंगे। देवकी के आठवें पुत्र कृष्ण ने जन्म ले लिया है और वे आ रहे हैं, ऐसा देखकर उन्होंने उफान को कम कर दिया और उनके चरणों को पधारा। ऐसी हमारी यमुना मां, गंगा मां है। आज बिहार में ऐसी बहुत सी जगह हैं, जहां पर छठ व्रत नहीं हो रहा है। लाखों नर-नारी छठ व्रत करते हैं, वे कहां खड़े होंगे, अपने घरों में तालाब आदि बनाकर लोग पूजा करते हैं। आज ऐसी हालत है। बिजली के नाम पर, यह बिजली कहां जा रही है, बिजली कहां है, किस गांव में बिजली जा रही है, आप किस झोंपड़ी में बिजली भेज रहे हैं? शहर में बिजली भेजते हैं, क्या करते हैं, कौन बिजली बेच रहा है, क्या कर रहा है, लोग दुल्हन की तरह घरों को सजा रहे हैं। हमारे दरभंगा का वह लड़का निगमानंद शहीद हो गया। हम सबको बाद में मालूम हुआ कि गंगा की रक्षा के लिए, पॉल्यूशन को रोकने के लिए वह शहीद हो गया। इन सारी चीजों को आपको देखना पड़ेगा। प्रधानमंत्री जी कहां हैं, प्रधानमंत्री जी ने पहले ही घोषणा की है कि गंगा राष्ट्रीय नदी होगी। इसका रखा-रखाव होगा, इसे पॉल्यूशन मुक्त किया जायेगा, यमुना को पॉल्यूशन मुक्त किया जायेगा। जैसे पानी चलता था, गेट को उतरवाइये, नहीं तो एक समय आयेगा कि लाखों-लाख जनता मार्च करेगी और फरवका को तोड़ डालेगी और देश को, अपने पानी को, अपनी धारा को, अपने जीवन को बचाने का काम करेगी। रेवती जी ने अच्छा काम किया है कि वे इसे लेकर आये हैं। गंगा मैया मां है, जहां कृष्ण भगवान की जय करते हैं, वहीं हम गंगा मैया और यमुना मैया की जय करते हैं। यमुना और गंगा मैया हमारी मां है। किसी ने यह गीत भी गाया है कि हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है। गंगा मेरी मां का नाम, बाप का नाम हिमालय है, यह कहा गया है, आप लोगों ने इसे गाया है। शंकर भोला बाबा, शंकर महादेव जी, मानसरोवर, हमारे देवता भी वहां पर कैद हुए हैं। ये लोग हिमालय को क्या बतायेंगे, हम पीछे खिसकते जा रहे हैं, हम पीछे हटते जा रहे हैं, इधर से जा रहे हैं, उधर जा रहे हैं, लेकिन यहां पर हाउस में बोलते हैं कि हम यह करेंगे, वह करेंगे। गंगा को साफ कराइये, गंगा के लिए आप सर्वदलीय मीटिंग बुलाइये। आपको कोई अवरूद्ध करता है, आपको कोई कमी है तो सभी पार्टी के लोगों को बुलाकर उसका हल निकालिये। गंगा, यमुना की सफाई और जितना यह सारा शोक है, इस शोक को हटाइये। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। जय गंगा मैया।

MR. CHAIRMAN : Hon. Members, those who want to lay their speeches on the Table of the House may do so.

* SHRI C. SIVASAMI (TIRUPPUR): Hon. Chairman, I thank you for giving me an opportunity to speak in the discussion on this important subject which this august House has taken up. River Ganga gets polluted in a big way and it is not restricted to river Ganga alone. Many of our rivers in the country are polluted massively and it is a matter of great concern. In the South in Tamil Nadu rivers like Cauvery, Coovum, Noyyal and Pennar are getting polluted. Instead of going in for cleansing a polluted river, it would be better to go into the root cause of the problem and take pre-emptive measures and avoid the river getting polluted. This would help us to protect a river from getting polluted. In the scientific age, as we resort to more and more of industrialization by way of setting of many industrial units, we get a problem on hand to dispose off the effluents from the factory units. The untreated effluents and the sewerage let off from the industrial towns cause massive pollution in the river systems available by their areas. To bring to your notice, a specific problem in a specific area, I would like to point out the pollution problem accruing to river Noyyal in my Tirupur Lok Sabha Constituency. This is a sub-river of River Cauvery and it used to have clean water that can be used for drinking, cooking and bathing purposes till some 30 years ago. But now, the water is not fit even for cultivation. Now, it is only a river of effluents from the dyeing units. Why this situation has arisen? It is not only the river Noyyal that has become unusable but it is also polluting river Cauvery. This calls for a concerted effort to treat the effluents from industrial units before it could flow into a river. Sewerage treatment plants also must be there along with effluent treatment plants for industrial units. In order to go for this processing that will avoid river pollutions, the Centre must liberally extend huge financial assistance to the state governments that can attend to the problems as per the ground reality and

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

the local problems. Our leader the Hon'ble Chief Minister of Tamil Nadu Puratchi Thalaivi Amma has recently announced a liberal interest free loan to the tune of about 200 crores of rupees to set up 13 to 15 such effluent treatment plants to overcome the pollution problems that affect river Noyyal and also the industrial activities there. In order to carry out river cleansing operation in a big way in Tamil Nadu the Centre must come forward with a special package and must extend at least `10,000 crores to the Government of Tamil Nadu. I urge upon the Union Government to look in to this. As the rivers get polluted due to industrial activities, the contaminated toxic water becomes unfit for cultivation. And it creates a rift and tension between the agriculturists and industrialists. There are also clashes in this regard between the farmers and those who work in industrial units. This even leads to law and order problem. All these problems can be solved by way of taking measures to treat waste water that flow into rivers. This calls for huge funding and the Centre must help the state governments with adequate release of funds to ensure the avoidance of river water pollution. It is not only Cauvery that is getting polluted but also river Pennar due to huge sewerage disposal from the city of Bangalore. Similarly, the river Coovum in Chennai that used to be its pride is now a big problem to the city as an open drainage with enormous flow of sewerage into it. I urge upon the Union Government to provide enormous funds several thousand crores of rupees to the Government

of Tamil Nadu to clean the river systems and to avoid further pollution by way of setting up treatment plants. With this I conclude thank you.

***डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी (अहमदाबाद पश्चिम):** हमारी पवित्र नदी गंगा और हिमालय के निर्मम दोहन के कारण उन दोनों के अस्तित्व को हो रहे खतरे और उत्पन्न स्थिति की महत्वपूर्ण चर्चा में आपने मुझे शामिल होने की अनुमति दी।

सैंकड़ों वर्षों से हमारी हिन्दू संस्कृति की अहम पहचान माँ गंगा एवं हिमालय के प्रति पर्यावरण एवं मानव जाति के खतरे से एक गंभीर परिस्थिति पैदा हुई है।

क्लाइमेट चेंज एवं हिमालय की प्राकृतिक संपदा को हम सबकी तरफ से एक गंभीर खतरा पैदा हुआ है। ग्लोबल वार्मिंग के तहत हिमालय के ग्लेशियर्स पिघल रहे हैं और गंगा का उद्भव स्थान पीछे खिसक रहा है। पर्वतारोहण और यात्रियों की वजह से हिमालय की पवित्रता के प्रति खतरा पैदा होता जा रहा है। ये एक गंभीर सवाल है।

इसी तरह हमारी हिन्दू संस्कृति का प्रतीक और हमारी धरोहर गंगा नदी के प्रति हमारे दुर्भाग्यपूर्ण रवैये की वजह से माँ गंगा की पवित्रता दूषित हो रही है। पवित्र गंगा में हम सारी गंदगी डालते हैं और गंगा के तट पर आए सभी शहर, कस्बे एवं गांवों के गटर की नालियां गंगा में प्रदूषित की जाती हैं। मेरा स्पष्ट मानना है कि गंगा नदी की पवित्रता को कायम करने की प्राथमिकता दी जानी चाहिए और सख्त कानून बनाकर भी गंगा की पवित्रता को बरकरार रखने का प्रयास होना चाहिए। एक सख्त कानून बनाकर हिमालय एवं गंगा की पवित्रता बनाए रखनी चाहिए।

* Speech was laid on the Table

***श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहान (साबरकांठा):** मैं गंगा नदी और हिमालय निर्मम दोहन के कारण उनके अस्तित्व को हो रहे खतरे से उत्पन्न स्थिति जैसे महत्व के विषय पर अपनी बात रखता हूँ।

हिमालय पर्वत और गंगा से पूजा करते आए हैं। उसमें स्नान करने से हमारे पाप नष्ट होते हैं, ऐसी धार्मिक भावना हमारे साथ जुड़ी हुई मैया हमारे देश का गौरव है। हमारी संस्कृति का अनमोल प्रतीक है। दोनों स्थानों की पवित्रता की हम सदियों न है। इसलिए हिमालय और गंगा नदी की शुद्धता, पवित्रता एवं अस्तित्व टिका रहे उसे देखने की जिम्मेदारी हमारी होनी चाहिए।

गंगा माता हमारा श्रद्धा केन्द्र है, आस्था केन्द्र है। उसका दोहन न हो। इसमें कचरा एवं गंदगी डाली न जाए। करोड़ों रुपये खर्च होने पर भी आज परिस्थिति में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आया है। हिमालय और गंगा के अस्तित्व को खतरा न हो, ऐसा कदम उठाना चाहिए। सभी क्षेत्रों का विकास होना चाहिए। हम विकास का विशेष नहीं करते, लेकिन टैक्नोलॉजी का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए ताकि इन स्थानों की पवित्रता एवं शुद्धता बरकरार रहे, उसे कोई नुकसान न हो, पर्यावरण को नुकसान न हो। इनके अस्तित्व को खतरा उत्पन्न न हो, क्योंकि हमारा अस्तित्व इनके अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत प्रस्ताव को अपना समर्थन प्रकट करता हूँ।

18.00 hrs.

MR. CHAIRMAN : Hon. Member, please take your seat for a minute.

Hon. Members, I have a list of eight more speakers to speak on this discussion. If the House agrees, the time of the House may be extended by one hour.

SOME HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: Okay; Shri Lingam, you may continue your speech now.

* SHRI P. LINGAM (TENKASI): Let me thank the Chair for giving me an opportunity to participate in the discussion on the need to protect our rivers from pollutions. River Ganga is one among the great rivers in the world which flows more than 2,000 kms from the place of its origin. The great Indian perennial river Ganges is about 2,500 kms. long. This discussion assumes importance because we are now deliberating on the need to protect river Ganga which is being polluted massively. Our Government needs to pay greater attention to protect our environment and our river systems from being polluted.

MR. CHAIRMAN : Just a minute. I have a list of 8 Members to speak in this discussion under Rule 193. So with the consent of the House let me extend the time by one hour. Now, you may please continue.

SHRI P. LINGAM : Rivers are important source for the irrigation needs of our agriculture. Rivers contributes to our food production. So, rivers and their water form the basis of our crop cultivation, agricultural activity and overall food production. River Ganga is referred to in our great epic Ramayana. Guha offers fish, as food to Lord Rama is what we find in that epic. That shows that

18.02 hrs (Dr. M. Thambidurai *in the Chair*)

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

from time immemorial clean water and pure water fishes were available in river Ganga. That only proves the point that river Ganga was flowing without pollution. But unfortunately, it has been heavily polluted now. It has been pointed out that fish catchments have been greatly hampered due to heavy pollution. People who have had their livelihood by way of catching fish have all been affected. River Ganga passes through several states and finding its confluence with several rivers like Yamuna, Gomti, Kosi and Damodar is increasingly becoming unsuitable for irrigation to carry on with agriculture. This has greatly affected our agricultural activity more particularly food production. The Government must wake up to this reality and must understand that pollution and agriculture production are inter-linked. Hence, we must take care to see that pollution does not come in the way of our food production. We need to bear this in mind at a time when we are going in to legislate Food Security Bill. If you want to increase our food production and ensure increased protection to our rivers the Government should think in terms of nationalising all the rivers of the country. Through our National River Water Policy the inter-linking of major rivers of the country was contemplated even at the time of Jawaharlal Nehru. But unfortunately, that project is being kept in cold storage successively. There is now a viable plan to link about 30 major rivers of the country. It is also estimated that it would ensure availability of water throughout the country. It has also been reported that through that project we can over come the problem of pollution.

Rivers originate from the hills. It makes the land fertile and suitable for cultivation when they flow across the plains. In Tamil Nadu the east flowing rivers are all originating from the Western Ghats. The plains of Tamil Nadu are best suited for crop cultivation and production of food grains, as agriculture has always been carried on in a big way from the ancient times. Such world-renowned agricultural plains must get continued irrigation and water supply. When it is possible to get abundant water flowing one part of the country to another place where water is in great demand it would only help the agricultural activities to go on uninterrupted.

Today several kinds of encroachments are made by the side of the rivers and also on the riverbeds by way of constructing resorts or quarrying sand. Thus the perpetrators of pollution and the encroachers even create panic and alarm about such rivers.

In Tamil Nadu we have Cauvery, Porunai, Vaigai, Palar the ancient ones which find themselves polluted now. Hence, we must go in for the Garland Canal Scheme to link the southern rivers and give life to the river systems there. I urge upon the Government to nationalise all the rivers and to see that all the rivers are cleansed and protected from being polluted further.

We must go in for conserving water by way of protecting our rivers by way of nationalising them. Ours is an agro-economy and our agriculture is dependent on rivers. It is only when our agriculture is given an impetus, we can increase agricultural production. Now, at least at this juncture when we contemplate Food Security Bill, we must give priority to save our rivers and river water from being polluted. Apart from nationalising our rivers we must also go in for cleansing them in a big way.

What we witness today in Mullaiperiyar issue is nothing but a creation of those who want to encroach upon. They have even managed to create a panic about the Dam there for their self-ends. River water that flows in one part of the country must benefit the agricultural activities in the other parts of the country and that only adds to the national food production. So, water must unite us and integrate us. This can be done by way of nationalising all the rivers that are our national assets. So, we must protect our rivers from being contaminated or polluted and judiciously utilised and its waters are equitably distributed to augment agriculture and food production. With these I conclude. Thank you.

* SHRI THOL THIRUMAVALAVAN (CHIDAMBARAM): I heartily thank the Chair for giving me an opportunity to speak on this important subject. Our saint poet Thiruvalluvar said, "NEER INDRI AMAIYATHU VULAGU" "without water there cannot be our world". Water is inevitable for us all and we cannot survive without that and water is very much needed as an inseparable aspect in our life. We all know that water is one among the five elements that constitute life and this world. Three fourth of our globe is covered by sea and one fourth of land mass is there for us to live on. Though water is available in plenty and abundantly, sea-water cannot be consumed by us. So, nature has given us water as its gift that flows in our rivers. Nature on its own purifies the water from mineral sediments and various other salts and chemical compounds. We use to get serene water from the rivers. That is why water is considered as elixir of life.

River Ganga is our sacred river known for its purity. Now, we are concerned about the man-made problems that have interfered with nature. Since, river Ganga has been polluted in a big way, the Government of India has taken upon itself a massive scheme to clean Ganga evolving a project at a cost of about 7,000 crores of rupees. The action plan to improve the conditions of the river at various places have been devised and announced. We are now discussing this save Ganga programme after initiating our cleansing efforts, mobilising funds from World Bank and other sources. It has also been decided to get rupees 5,100 crores from the Centre and pool together rupees 1900 crores from the states of Uttarakhand, Jharkhand, Bihar, Uttar Pradesh and West Bengal.

At this juncture, I would like to point out to the ground reality in this country where we find heavy floods on one side and serious drought conditions on

* English translation of the speech originally delivered in Tamil.

the other one and the same time. Drinking water problem is a rampant in several parts of the country. The environmentalists and the futurologists predict that the next world war will be for water.

At a time when, water is essential and has become an integral part of our life, we also find people mindlessly polluting our water resources either by way of encroaching upon or by way of quarrying of sand and exploiting riverbeds or by way of constructing dams and threatening to demolishing the existing dams. By this we would only be harming interests and life of our future generations. In this generation, by way of polluting our rivers mindlessly, we are endangering the life of our future generation. So, it is necessary to preserve our rivers and conserve water and clean them.

In Tamil there is a proverb, "Thaayai Pazhithaalum, Thanneerai Pazhikkathey" which means "even if you insult your mother, don't do it to a river". That shows the importance that must be accorded to water. We must respect water and water resources even if we fail to respect our mother. When we are expected not to denigrate water, we are polluting water in several ways apart from allowing sewerage water to flow into river systems. Resorting to mining activities near the rivers cause enormous pollution. We are harming the smooth flow of our river systems and its capacity to purify the water by itself by way of quarrying sand mostly in illegal way exploiting nature, which has offered sand as a gift to mankind to cleanse water in a natural way. Lakhs of years have been spent by nature to produce sand but the mindless people exploit it with avarice and greed. This results in furthering the pollution, as there is no way to purify it when we pollute it. Recently, I had been to the river Ganga. The great Ganga that is considered to be a sacred river and a perennial river, which is being celebrated in our great epics is now full of impurity and not fit even to wash our hands with. I was greatly shocked and saddened by the dirtiness of the impure water there.

On this occasion, I would like to urge upon the Union Government to take up the inter-linking of rivers projects and take steps to link river Ganga with river Cauvery to create a situation that there is no place in India where there is scarcity of water. River Ganga does not belong to mere five states in India but it belongs to the entire country and it is a scared asset of all the hundred and ten crore people of India. So, we must take efforts to take river Ganga to the South thereby linking it with river Cauvery and bring to an end to the drought situation. As a step towards this, all the rivers must be nationalized. No river must be considered as a property of that particular state in which it is flowing. For instance Mullaperiyar belongs to the people of both the States of Tamil Nadu and Kerala. It must not be considered as one that belongs to a single state. Just because Cauvery originates in Karnataka it is considered to be their property over which they alone can wield their rights. That has resulted in a situation where Tamil Nadu has to wait for water looking to Karnataka. Be it Mullaperiyar or Cauvery or Bhavani or Palar, it belongs to all the people of the country. In the absence of this spirit Tamil Nadu is finding itself in a position to look to the neighbouring states with the begging bowl for water. I would like to reiterate my demand that the Union Government must take immediate step to nationalise all the rivers in order to save them from pollution and conserve water for equitable distribution. In order to make our country a more fertile land, we must link Ganges with Cauvery. As such, we have drinking water problem in many of our villages or in almost every village. Whenever we visit our Lok Sabha Constituencies, we receive number of complaints about scarcity of drinking water and inadequate water supply. This problem assumes priority. So, we must take steps to put an end to this problem ensuring adequate drinking water supply, providing water for irrigation, creating pure environ for fishes to grow and thereby increasing overall agricultural production. Hence, it is the need of the hour to save and conserve water. So, it is necessary to take up Ganga-Cauvery link project to make India a prosperous country.

The developed world is concerned about the environmental pollution leading to global warming. So, there is a campaign to create awareness in the minds of the people of the world. Reiterating again the need to link river Ganga with river Cauvery and to protect our rivers from getting polluted further and to nationalise all the rivers to pave way for India's prosperity let me conclude thank you.

* श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): माननीय सभापति जी, मैं गंगा नदी व हिमालय को बचाने के नियम-193 के अधीन हो रही चर्चा के संबंध में निम्नांकित सुझाव ले करना चाहता हूँ :-

1. गंगा मात्र नदी नहीं है, गंगा भारत का जीवन प्रवाह है। इसे बचाना भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को बचाना है। गंगा नदी को बचाने के लिए टोटलिटी में प्रयास होने चाहिए।
2. नागरिकों को भी निरंतर जागरूक करने की जरूरत है। सरकार के प्रयासों में भी निरंतरता आवश्यक है। मॉनिटरिंग की व्यवस्था भी सुदृढ़ की जानी आवश्यक है ताकि सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई राशि का समय पर उपयोग संभव हो सके।
3. विकास व पर्यावरण संरक्षण में संतुलन बनाने की आवश्यकता है। किसी निजी स्वार्थ के लिए जो राशि हड़पते हैं उन्हें सख्त सजा का प्रावधान 6 माह में किया जाना आवश्यक है।

* Speech was laid on the Table

* **श्री ए.टी. नाना पाटील (जलगांव):** महोदय, मैं बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण गंगा नदी के प्रदूषण और प्रवाह रोकने के विषय पर विचार रखने का अवसर दिया।

हमारे देश की पवित्रता गंगा नदी और यमुना नदी है। मगर आज गंगा नदी का प्रवाह रोक देने के वजह से हमारी गंगा नदी दिनोंदिन सूखती जा रही है और आज जो पानी हमारी गंगा नदी में बचा है वह शहर का गंदगी वाला पानी और औद्योगिक रसायन से प्रदूषित पानी अभी हमारी नदी में आ रहा है। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि हमारे देश की स्वर्ण से आई हुई हमारी पवित्रता के रूप में आई हुई हमारी गंगा नदी की आज सारे स्थानों पर इसकी दुर्दशा हो रही है। इसको रोकना चाहिए। इसी के कारण प्रवाह कम होने के कारण किसानों को पानी नहीं मिल रहा। नदी में पानी न होने के कारण नदी में मछली नहीं मिल पा रही है। उसी के कारण हमारे सारे मछुआरों को समस्याएं हो रही हैं। यह अगर सभी समस्याओं को दूर करना है तो गंगा नदी पट्टी पर लगाए जा रहे बांधों की रोक लगाई जाए और अभी फिलहाल जो पानी हमारी गंगा मैया में है, वहां पानी प्रदूषण रोककर उसे ट्रिटमेंट प्लांट लगाकर उसे शुद्ध करके सबके उपयोग में लाया जाए।

मैं सरकार को विनती करता हूँ कि हमारे देश की पवित्रता गंगा और यमुना नदी और देश के अंदर बहने वाली सारी नदियों के बांधों को रोककर और उसकी शुद्धता को ध्यान में रखकर सबकी खुशहाली की ओर ध्यान देकर हमारी संस्कृति कायम रखें। इसी विनती के साथ अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

* Speech was laid on the Table

* **श्री रामाशंकर राजभर (सलेमपुर):** गंगा को समाप्त व दोहन के एक परिणाम को बताता हूँ। गंगा के मैदान में आर्सेनिक के असर के बारे में एसईएस के डायरेक्टर रिसर्च प्रोफेसर दीपांकर चक्रवर्ती के शोध के अनुसार गंगा के अंतिम छोर बंगाल की खाड़ी, असम, पश्चिम बंगाल, झारखंड और बिहार के बाद पूर्वी उ.प्र. में आर्सेनिक पाया गया है। जबकि बेतहासा दोहन व कुओं के समाप्त होने के कारण जमीन के भीतर जल में आर्सेनिक (संखिया) बहुत बढ़ गई है। बोरेल व हैंडपंप जहरीला पानी उगल रहे हैं। शीर्ष वैज्ञानिक शुमार चक्रवर्ती ने हमारे संसदीय क्षेत्र बलिया में आर्सेनिक होने की पुष्टि की थी। उ.प्र. में बलिया सहित बरेली, खीरी, बहराइच, गोरखपुर, बक्सर, भोजपुर, गाजीपुर, चन्दौली, वाराणसी, इलाहाबाद, उन्नाव, कानपुर, जनपद पूर्ण प्रभावित है। पानी पीने से त्वचा फेफड़ों, मुत्राशय, गुर्दे, कैंसर आदि बीमारी से लोग मर रहे हैं। हमारे क्षेत्र बलिया जनपद में ही 3.5 लाख लोग बीमार हैं और असमय ही काल के गाल जा रहे हैं। खीरी में 165 गांव, बहराइच में 438 गांव, बरेली में 14, गोरखपुर में 45, गाजीपुर में 24, चन्दौली में 19 गांव सर्वाधिक प्रभावित हैं और हमारे बलिया के वैरिया ब्लॉक में 70 से ज्यादा

मर चुके हैं। वैज्ञानिकों ने बलिया में 500 माइक्रोग्राम प्रति लीटर तक आर्सेनिक पाया है। बलिया के ग्राम बाबूरानी में 225, हासनगर पुरानी बस्ती 400, उदवंत छपरा 360, चोबे छपरा 220, चैन छपरा 500, राजपुर एकौना 500, हरिहरपुर 200, बहुआरा 130, भोजपुर 130, सुल्तानपुर 140, चाँदपुर 140 तक आर्सेनिक पाया गया। उत्तर प्रदेश की माननीय मुख्यमंत्री जी ने जनपद बलिया में 100 करोड़ की लगात से 66 पानी की टंकी बनाकर निपटने का प्रयास किया है। वैज्ञानिकों ने तालाबों में पानी इकट्ठा करने, कुआं खोदने की राय दी है।

महोदय, मैं मांग करता हूँ कि ग्रामीण विकास मंत्रालय इसमें प्रभावी पहल करे और आम जनता को इससे मुक्ति दिलाने हेतु भारत सरकार इन जनपद के लोगों को बचाने के लिए विशेष पैकेज दे। इसलिए आज की चर्चा में मैं पर्यावरण मंत्रालय से कहना चाहता हूँ कि हिमालय अगर समाप्त हुआ तो देश समाप्त हो जाएगा और कोई नहीं बचेगा। विश्व में 97.25 औं जल खरा है। केवल 2.27 औं जल मीठा जल है। गंगा नदी आधे भारत को मीठा जल, खेती हेतु जल, धार्मिक अनुष्ठान, पर्यटन, मछली पालन आदि से सुशोभित करती है। माँ गंगा को समाप्त कर जीवन की कल्पना बेमानी है। गंगा के उद्गम स्थान में बिजली बनाने के चक्कर में जो अवरोध, बांध बनाकर कर रहे हैं उससे गंगा में पानी नहीं होगा। जब गंगा सूख जाएगी तो सफाई किसकी करेंगे, इसलिए पर्यावरण मंत्रालय किसी भी कीमत पर गंगा से छेड़छाड़ करने वाले सभी कारकों को कड़ी सजा दे।

* **श्री संजय धोत्रे (अकोला):** श्री रेवती रमन सिंह जी ने गंगा नदी और हिमालय के अस्तित्व को हो रहे खतरे का महत्वपूर्ण विषय उठाया। मैं उससे पूरी तरह सहमत हूँ। नदियां हमारा जीवन हैं। हमारा अस्तित्व है। गांव शहर का गंदा पानी, कारखानों का गंदा पानी इसकी वजह से छोटे नाले, छोटी नदियां, फिर बड़ी नदियां और समुद्र पूरी तरह प्रदूषित और जहरीली हो गई। हमें इसकी जड़ तक जाना पड़ेगा। इसके कारण भूजल भी दूषित हो रहा है। कई तरह की भयंकर बीमारियां हो रही हैं। यह खतरा पूरे मानव, पक्षी, पशु, जलाजीव सबके लिए है। हमें इसके मूल जड़ तक जाना होगा। कई कानून हैं लेकिन सख्ती से अमल नहीं होते। गंदा जल जहां पैदा होता है वहीं उसके शुद्धिकरण की प्रक्रिया करनी पड़ेगी। इसके लिए सख्त कानून बने और उसका अमल हो।

* Speech was laid on the Table

श्रीमती अन्नू टण्डन (उन्नाव): सभापति महोदय, आज की चर्चा में भाग लेने का आपने मुझे मौका दिया, इसके लिए धन्यवाद।

हमें अपनी मां यानि गंगा मैया के शोषण के ऊपर चिन्ता व्यक्त करने का यह अमूल्य मौका मिला है। पुराण या इतिहास में जो गंगा जी के महत्व के बारे में लिखा गया है, उसको दोहराने की कोई आवश्यकता मुझे नहीं लगती। गंगोत्री से, भागीरथी से लेकर उत्तर प्रदेश होते हुए बंगाल की खाड़ी में समाहित होने के पहले 2525 किलोमीटर गंगा जी का सफर होता है। गंगा जी के शोषण में आज की चर्चा के हिसाब से ऐसा लग रहा है कि अहम भूमिका बिजली उत्पादन की जरूरत को माना जा रहा है। हमारे विशेषज्ञों का कहना है कि गंगा बेसिन में हाइड्रो पावर का पोटेंशियल 60 प्रतिशत लोड के ऊपर करीबन 10,715 मैगावाट है। लेकिन कहा जाता है कि अभी तक उसका इस्तेमाल सिर्फ 12 प्रतिशत ही किया गया है। मैं मानती हूँ कि बिजली की आवश्यकता अहम है, पर क्या यह गंगा मैया को मारने के बाद पूरी होगी?

आप टिहरी डैम का उदाहरण देख लीजिए। इस डैम से एक नगर तो डूब ही गया, उसके अलावा 2200 करोड़ रुपये का खर्चा बताकर 26 हजार मैगावाट बिजली पैदा करने की बात की गई थी, पर खर्चा 66 हजार करोड़ रुपये हुआ और आज बिजली जो पैदा हो रही है, वह एक समय पर एक हजार मैगावाट से ज्यादा पैदा नहीं हुई है।

उसके अलावा भागीरथी पर जो बांध का काम हुआ, वह मुश्किल से रुका, तो पता चला मंदाकिनी और अलखनंदा पर डैम बनाने की बात की जा रही है। आज हमारा जो पड़ोसी प्रदेश उत्तराखंड है, वह पता नहीं 100, 150, 300, 500, कितने ही बांधों का निर्माण गंगा की सहायक नदियों पर बनाने का प्रस्ताव रख रहा है। इसका नतीजा क्या होगा? इसका नतीजा यह होगा कि हमारा पर्यावरण तो मुश्किल में आएगा ही, पर्यावरण का नुकसान तो होगा ही, लेकिन उत्तराखंड में तो पानी के बहाव की तेजी में कोई अंतर नहीं आएगा, परंतु हमारे मध्य उत्तर प्रदेश व पूर्वी उत्तर प्रदेश में, बिहार और बंगाल तक गंगा जी के पहुंचते-पहुंचते इसके बहाव के प्रेशर में बहुत कमी आ जाएगी।

आज हमारे यहां उत्तर प्रदेश में शारदा सहायक नहर परियोजना और सरयू नहर परियोजना दोनों गंगा पर निर्भर हैं। आज इन दोनों नहर परियोजनाओं की सफाई व रख-रखाव न होने के कारण पहले से ही बहुत मुश्किल है और पानी की कमी है। अब ये सारे बांध बन जाने के बाद क्या हालत होगी, भगवान ही मालिक है। आज गंगा जी की उपलब्धता यहां के नागरिकों, खासकर किसानों के लिए कम होती जा रही है। इसका कारण क्या है? इसका कारण गंगा तट पर औद्योगिकीकरण और शहरीकरण होना है।

ताज एक्सप्रेस कोरीडोर की बात अगर ले लीजिए, तो वहां पर भी बगल में 14 किलोमीटर छोड़कर उनको शहरीकरण करना चाहिए, लेकिन इसे भी नजरंदाज किया जा रहा है, तो भगवान ही मालिक है कि हमारे उत्तर प्रदेश की हालत क्या होगी?

इत्लीगल माइनिंग जो डरावना भविष्य पैदा कर रही है, उसके बारे में चर्चा करने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं लगती है। यहां जितने भी माननीय सदस्य हैं, वे सब इस बात को अच्छी तरह से समझते हैं। यहां में गंगा तट पर बसे उत्तर प्रदेश के बनारस व इलाहाबाद के प्रदूषण के बारे में भी सदन का सिर्फ ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं, क्योंकि पूर्व वक्ताओं ने इसके बारे में पूरी तरह से जानकारी हमें दी है। मेरा लोकसभा क्षेत्र उन्नाव गंगा के इस पार है और दूसरी तरफ कानपुर बसा हुआ है। मैं बहुत शर्मिंदा होकर बताना चाहती हूं कि उन्नाव और कानपुर के उद्योग, खासकर चमड़ा उद्योग पूर्ण रूप से गंगा को प्रदूषित कर रहा है और इसमें पूरा योगदान दे रहा है। इसकी लड़ाई मैंने अपने जीवन काल में अहम लड़ाई मान रखी है और इसे आखिरी दम तक लड़ती रहूंगी।

यूनाइटेड नेशंस की क्लाइमेट रिपोर्ट, 2007 में बताया है कि गंगा मां का शोषण का सिलसिला अगर इसी तरह चलता रहा तो वर्ष 2030 तक गंगा जी शायद लुप्त हो जाएं और पानी का बहाव सिर्फ बरसाती रह जाए। यद्यपि मैं इस बात को पूरी तरह से नहीं मानती हूं, लेकिन एक हिंदुस्तानी होने के नाते यह विश्वास रखती हूं कि गंगा न कभी लुप्त होगी और न हम सब यहां बैठकर उसको लुप्त होने देंगे।

इन हालातों का समझते हुए, उत्तराखंड की डैम परियोजनाओं के ऊपर पुनर्विचार करने के लिए एवं गंगा जी पर काम को रोकने और समझने के लिए फॉरेस्ट एंड वाइल्डलाइफ कमेटी ने सलाह दी है, जो इन्वॉयर्नमेंट एंड फॉरेस्ट मिनिस्ट्री के अधीन आती है। जब तक इसकी पूरी जानकारी व इन डैमों के, इन बांधों के असर के बारे में अध्ययन न हो जाए, तब तक कोई भी डैम बनने पर रोक लगा देनी चाहिए। नेशनल गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी का गठन भी हुआ, जो कि पर्यावरण मंत्रालय के अधीन तो है, परंतु इसका नेतृत्व हमारे प्रधानमंत्री खुद कर रहे हैं।

मैं आशा करती हूं और विश्वास रखती हूं कि हमारी सरकार इस पर सोच-विचार कर ही कदम बढ़ाएगी। हमारी इसी केंद्रीय सरकार ने यूपीए टू ने इसकी अहमियत को समझा और लोहारी, नागपाला जैसी बड़ी परियोजना में, जिसमें पांच सौ करोड़ रूपए पहले ही खर्च हो चुके थे, उसके बावजूद ईको सिस्टम को बचाने के लिए, उन्होंने इसकी पहल की और इसे रोक। इसके अलावा गौमुख से मात्र नौ किलोमीटर दूरी पर, भैरव घाटी पर जो बांध बनाया जा रहा था, उसे भी रोक गया।

अगर किसी भी प्रदेश में, हमारे देश में प्रगति होती है, तो हमें भी खुशी होती है, परंतु गंगा बेसिन का शोषण करके उत्तराखंड की सरकार जो कर रही है, वह विचारणीय है, क्योंकि इससे उत्तराखंड को बिजली तो पर्याप्त मात्रा में जरूर मिल जाएगी, बल्कि उससे ज्यादा मिलेगी और वह उसे दूसरे प्रदेशों में बेचकर मुनाफा भी कमायेंगे, पर हमारे उत्तर प्रदेश में पानी की कमी का शिकार हमें होना पड़ेगा, उत्तराखंड पर निर्भर होना पड़ेगा। कब वह पानी दे, कब पानी न दे, जिस तरह की लड़ाइयां दूसरी जगह हो रही हैं, वह हमारे यहां भी होने लगेगी।

मेरे लोक सभा क्षेत्र उन्नाव के किसान भाई शारदा सहायक नहर परियोजना के पानी पर निर्भर हैं। गंगा में पर्याप्त पानी न होने की वजह से और रायबरेली व उन्नाव दोनों के इस नहर के टेल-एंड पर होने की वजह से जरूरत भर का पानी उसको नहीं मिल पाता है। शारदा सहायक नहर परियोजना की तीन ब्रांच उन्नाव में हैं।

उन्नाव, पुरवा एवं आसीवन जिसमें आज 19 दिसम्बर 2011 को भी आसीवन ब्रांच द्वारा बिल्कुल भी पानी नहीं मिल रहा है। राज्य सरकार द्वारा इन नहरों की डिजिटलईंग एवं रख-रखाव ठीक से नहीं करने की वजह से हमारे खेत पानी से वंचित हैं। किसानों में यह भय फैल गया है कि क्या खेती की फसल भी बर्बाद हो जाएगी? सभापति महोदय, आज इस बहस के माध्यम से आप के द्वारा मैं एक अर्जेंट अपील करना चाहती हूं - पहला, हमारी गंगा मां को बचाने के लिए कोई कसर न छोड़ी जाए। यह राष्ट्र नदी घोषित की गई है इसके हिसाब से उसको पूरा सम्मान मिलनी चाहिए। गंगा मइया के किसी भी परियोजना में में चोरी करने वाले को मां की हत्या के बराबर का दंड दिया जाना चाहिए। दूसरा, मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि हमारे उत्तर प्रदेश में शारदा सहायक नहर परियोजना और सरयू नहर परियोजना को नेशनल प्रोजेक्ट घोषित कर केन्द्र सरकार के हस्तक्षेप से हमारे किसान भाइयों की आवाज सुनें।

श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय (गिरिडीह): धन्यवाद सभापति महोदय, आज माननीय सदस्यगण ने अपने-अपने विचार इस सदन में रखे कि गंगा को कैसे बचाएं? गंगा हमारी मां है और सदियों से इतिहास गवाह है कि गंगा का जो जल है वह अमृत के समान है। अगर देखा जाए तो वह धीरे-धीरे उस पर डैम बना कर या उसके अगल-बगल जो शहर बसे हुए हैं उनका कचरा उसमें जा रहा है और नदी प्रदूषित हो रही है। सरकार की योजनाएं बनती हैं लेकिन धरातल पर नहीं उतर रही हैं। गंगा

की सफाई के लिए विदेश से पैसा मिले या भारत सरकार ने उस पर पैसा खर्च किया हो, उसकी उपयोगिता न के बराबर है। सभापति, हमारा आप से आग्रह होगा कि अभी जितना खर्च हुआ है उसको हम कैसे सही उपयोग में ला कर गंगा की सफाई करें ताकि भविष्य में गंगा प्रदूषित न हो। झारखंड में दामोदर नदी है, जिसकी गिनती विश्व के जहरीली नदी में हो गई है। उसकी भी सफाई की योजनाएं बनी लेकिन धरातल पर नहीं उतरी है। इसी लोक सभा में माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि आने वाले समय में नदियों को जोड़ने का कार्यक्रम हम लोग नहीं करेंगे तो पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं होगा और सिंचाई की व्यवस्था नहीं होगी। आने वाले समय में दूसरा विश्व युद्ध जल के लिए होगा। अब सरकार को चिंतन करना है। यह दोषारोपण का विषय नहीं है कि उत्तराखंड में कितना डैम बन रहा है और कितना प्रतिशत बिजली का उत्पादन हो रहा है, या होगा? विषय यह है कि हम इसको कैसे सुधार करें और भविष्य में जो हमारी नदियां हैं उन्हें हम कैसे सुरक्षित रखें। आपने मुझे समय दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

ओ श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ): गंगा केवल नदी नहीं है-गंगा इस देश की जीवन धारा है, इस देश की पहचान है। गंगा के पवित्र किनारों पर हमारी संस्कृति, सभ्यता का निर्माण हुआ है। गंगा हमें युगों युगों से शुचिता, निरंतरता, गतिशीलता का संदेश देती रही है। गंगा के अमृतजल से हम जीवन भर पुष्ट होते हैं तथा अंत में गंगा ही हमें शरण देती है। इसलिए गंगा माँ है। आज बड़ा सुखद संयोग है कि आज ही इस सदन में गीता की भी चर्चा हुई है, दोनों ही हमारे पूज्य हैं।

गंगा को सुरक्षित रखने के लिए माननीय सदस्यों ने अनेक सुझाव दिये हैं, अनेक कार्य-योजनाओं की चर्चा यहाँ हुई है जिनमें अब तक हजारों करोड़ खर्च किये जा चुके हैं परंतु महोदय जैसा कि सदन में चिन्ता व्यक्त की गई गंगा का स्वास्थ्य निरंतर गिर रहा है। प्राण दायिनी गंगा क्रमशः प्राण विहीन होती जा रही है। गंगा को अनेक प्रकार से प्रदूषित किया जाता है। उद्योग अपने विषैले अपशिष्ट को गंगा में डाल देते हैं, कई स्थानों पर जमीन में बोरिंग करके इस प्रदूषित जल को सीधे भूजल में डाल दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप ऐसे उद्योगों के निकट से बहने वाली गंगा भी विषैली हो रही है। महोदय, ऐसे लोग मानवता के प्रति अपराधी हैं, इसे रोकने के लिए कड़े दंडविधानों का किया जाना जरूरी है।

गंगा के किनारे बसे सैकड़ों नगरो-महानगरों का अपशिष्ट प्रदूषित जल सीधे गंगा में डाल देते हैं। कानपुर-वाराणसी पटना-कोलकाता जैसे महानगरों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ऐसे नाले देखे जा सकते हैं जिनसे इन शहरों का करोड़ों गैलन मलयुक्त प्रदूषित जल गंगा में डाल दिया जाता है। महोदय, स्थानीय निकायों के पास संभवतः इतने संसाधन नहीं हैं कि वे अपने स्तर पर इस संपूर्ण प्रदूषित जल को प्रदूषण मुक्त कर सकें तथा संभवतः यह उनकी प्राथमिकता भी नहीं है। मेरा निवेदन है कि इस प्रदूषित जल को शोधन करने की जिम्मेदारी पूरी तरह से केन्द्र सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से स्वयं वहन करे। इस जिम्मेदारी को स्थानीय निकायों अथवा प्रदेश सरकारों पर न छोड़ा जाये। केन्द्र सरकार तदनुसार बड़े-बड़े अपेक्षित शोधन यंत्र लगाए तथा केवल शुद्ध किये जल को गंगा में जाने दे।

महोदय, प्रधानमंत्री जी ने गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित किया है। उसके अनुरूप गंगा को बचाया जाना आवश्यक है। मेरा निवेदन है कि इस दृष्टि से सभी उपाय किये जायें।

* Speech was laid on the Table

MR. CHAIRMAN : Shri Prasanta Kumar Majumdar. You may complete your speech in two minutes.

SHRI PRASANTA KUMAR MAJUMDAR (BALURGHAT): Sir, I may be given more time.

MR. CHAIRMAN: The time has already been allotted and we have to adjust ourselves according to that so that we can give chance and accommodate all the hon. Members.

SHRI PRASANTA KUMAR MAJUMDAR : Sir, I would request you to give me some more time.

Sir, the river Ganges has three dimensions, namely, religious, economic and environmental. The river Ganges is our mother.

* Respected Chairman Sir, river Ganga is another name for 'sacredness' in our country. Ganga is considered as a goddess – a fair, beautiful woman with white sari, decked up in jewellery, holding a lotus and a water pot and riding on her pet crocodile. Today we are discussing the threat to Ganga which actually holds an exalted place in Hindu culture and religion. India is a secular country with various communities, religion but this river is held in high esteem by its people, particularly the Hindus. Ganga is regarded as our mother and is referred in many Indian texts like the Vedas, Ramayana, Mahabharata and Puranas. The other name of Ganga is Bhagirathi after sage Bhagirathi who brought her to the earth.

Gangajal or water of Ganga is very sacred and the Hindus do not ever try to disrespect it. It can destroy all the sins of the past. Taking a holy dip in Ganga is a sure way to gain salvation. If a person dies, Ganga water is sprinkled, his ashes are immersed in the river, the cremation takes place on the banks of Ganga as it is believed that if one dies at the Ganga banks

one can reach heavenly abodes. So

ÂÂÂ-----

* English translation of the speech originally delivered in Bengali.

there is no end to the glories of Mother Ganges. She is an indelible part of the Hindu culture and society. Mother Ganga can be rightly called the Mother of Hindu spirit. She is not just a river or a water body that flows into the land. She is considered as a Goddess. Hindus view her as a beautiful woman wearing a white sari decorated beautifully with jewels holding a lotus and a water pot in her hand. Mother Ganga signifies Hindu religion

This was the historical and cultural aspect of the Ganges. Coming to the economic aspect, it is a known fact that the Indo Gangetic Plain is very fertile due to the river water which is immensely helpful for agricultural activities. Crops are grown and the farmers are dependent on the water for cultivation purposes. Since the land remains wet, the environment also remains soothing and pleasant. But if the river narrows down, if quantum of water becomes less then it can adversely affect agriculture. Thus it is necessary that river is allowed to flow uninterruptedly. When dams are constructed at various places, it naturally reduces the flow. Ganga passes through many states after originating from the Himalayas, but every now and then, dams restrict the flow of water. In my state West Bengal also, the Farakka dam obstructs the river while the Calcutta port is in poor condition. So the Central Government must take steps in this regard. The fishing community of the basin is wholly dependent on Ganga. You must be aware that the Hilsa fish is available in this river. So this river must be preserved in the interest of the fishermen also.

There is pollution of Ganga which adversely affects the ecology and environment and in turn the livelihood of the people. In Bengal, we celebrate Durga Puja every year and once the festivals are over, the idols are immersed in Ganga thereby polluting the water beyond measure. Therefore this practice must be stopped immediately and an alternate way should be found for immersion to contain further deterioration of water quality and the river should be cleaned at regular intervals.

Therefore I urge upon the Central Government to look into all these aspects and take immediate action to save the sacred river as well as the entire Himalayan region to safeguard the ecological balance of the Indian subcontinent. Other wise the nature might play havoc with us and we will have nothing to fall back upon. The funds earmarked for the purpose should be utilized properly and not misused.

With these words, I thank you sir, for allowing me to speak on the subject and conclude my speech.

***श्री गोरखनाथ पाण्डेय (भदोही):** श्री कुंवर रेवती रमण सिंह, श्री शरद यादव जी द्वारा रखे गए गंगा नदी और हिमालय के निर्मम दोहन के कारण उनके अस्तित्व को हो रहे खतरे से उत्पन्न स्थिति के बारे में हम कुछ सुझाव देना चाहते हैं। महोदय, गंगा हमारे देश की राष्ट्रीय नदी घोषित की गई। प्रदूषण बोर्ड के अध्यक्ष माननीय प्रधानमंत्री जी हैं। अफसोस है कि गंगा की अविरल धारा प्रवाह को रोका जा रहा है। गंगा का पवित्र जल प्रदूषित हो गया है। प्रदूषण से पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। गंगा नदी ही नहीं, देश की पहचान से जुड़ी है। यह भारत की अस्मिता से जुड़ी है। इनको प्रदूषित करने में किनारों पर बसे हुए नगरों, महानगरों का

केमिकल युक्त प्रदूषित जल फैक्ट्रियों का गंदा पानी छोड़ा जाता है जो जल को प्रदूषित कर रहा है।

महोदय, पुराणों में रामायण में गंगा नदी की पवित्रता के संबंध में कहा गया है -

""गंगे तथा दर्शनात् मुक्तः""

रामायण में कहा गया है -

""दर्शन किए अनेक फल, भज्जन ते अथ अध जाहि।""

किंतु आज इस पवित्र, पतित पावनी नदी पर अनेक बांध बनाए जा रहे हैं, उन्हें रोकना होगा।

गंगा प्रदूषण को रोकने हेतु नगरों के गंदे प्रदूषित, केमिकल युक्त पानी को गंगा नदी में मिलाने से रोकना होगा। अविरल प्रवाह को बनाए रखना होगा। देश की भावना से जुड़ी हुई हमारे देश को पेयजल, हरियाली, जलस्तर एवं उपजाऊ जमीन प्रदान करती है। इन्हें सुरक्षित, संरक्षित रखना चाहिए।

जहां गंगा नदी को प्रदूषण, पर्यावरण को सुरक्षित रखना है वहीं पूर्वांचल उत्तर प्रदेश में वर्षा के समय बाढ़, कटाव से भी बचाना होगा। हमारा भदोही जनपद लोक सभा क्षेत्र इलाहाबाद से लेकर वाराणसी तक कई दर्जन गांव बाढ़, कटाव से प्रभावित हो रहे हैं। वहां तटबंध बनाने की आवश्यकता है। अंत में, मैं सरकार से अपील करना चाहता हूँ कि हिमालय के ग्लेशियर को सुरक्षित रखने हेतु प्रयास करें। गंगा को प्रदूषण से बचाएं तथा देश की धरोहर के रूप में हमारी माँ के रूप में जानी जाती है। इन्हें सुरक्षित रखने का कारगर उपाय करें।

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Mr. Chairman, I stand here to participate in the discussion initiated by Shri Rewati Raman Singh. Invariably all the leaders of this House belonging to different political parties have also expressed their opinion.

I had been fortunate enough to be a Member of the Public Accounts Committee ten years back when Sardar Buta Singh was the Chairman of the Public Accounts Committee. At that time the Comptroller and Auditor General had submitted a Report. ...(*Interruptions*) After that Report was tabled in this House, the Public Accounts Committee had taken it up for consideration. It was a Herculean task to travel from Rishikesh to Patna. I had varied experience going across different cities and towns on both sides of the bank of Ganga and also of Yamuna. We also went to Lucknow because that was also part of the Ganga Action Plan.

This Plan was initiated by late Shri Rajiv Gandhi when he was the Prime Minister. A big amount, I think, Rs. 1,000 crore or more was provided to keep the Ganga clean. Subsequently, the Ganga Action Plan II also came into existence. I do not know whether those who have been in power, at the Centre or in the respective States, starting from Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, West Bengal and to a certain extent Jharkhand, have gone through that Report or not. I will come to what that Report had recommended. That was a Parliamentary Committee Report of Public Accounts Committee. It had pointed out the failure of the respective State machineries in keeping the Ganga clean.

Why should we call this river as Mother Ganga? No other country in this world ever addresses its river as 'Mother'. We all know there is a large river in China. But they call it the 'Sorrow of China'. No one ever calls any river as 'Mother' of that land. But here, for ages together, for more than thousands of years, as the civilization grew in this part of the world, we have been calling this river 'Mother Ganga'.

This river is more than 2,510 kms. long. It originates from the Gangotri Glaciers in Uttarakhand, in the Central Himalayas, and runs into the Bay of Bengal. The Ganga basin is the largest one in India constituting 26 per cent of the country's land mass, and supporting 43 per cent of its population. That shows how huge this Ganga Basin is! It has an average population density of 523 people per sq. km. making it one of the most congested river basins in the world. The Basin covers 230 cities and towns. It is all statistics. The Government has it. Many people who are interested in the development of this Basin are also aware of it. But I will give you one instance about the city of Patna.

The Central Pollution Control Board in its Report said that the total coliform count in Patna downstream has been calculated at 1,60,000 Most Probable Number (MPN) per 100 ml, nearly 60 times higher than the permissible limit of just 2,500 MPN/100 ml. The faecal coliform count is also alarmingly high at 50,000 MPN/100 ml, 100 times more than the permissible limit of just 500.

Here, I quote what the noted environmentalist Shri R.K. Sinha has said:

"Forget drinking, the water is dangerous even for bathing. To expect that the river retains the mythological traits intact, is a sheer wishful thinking.."

This is the amount of helplessness that our environmentalists have expressed. Here, I would like to say that the sacred River is unfit even for bathing! Of course, Shri Lalu Prasad just mentioned that during the Chat Festival, it was difficult to offer *arghya* to the Sun God. This is the situation which all of us have been facing who travel all along the River Ganga. That was my experience.

I came across another research study that is relating to Patna town with a population of about 18 lakhs, - it is much more – generates about 200 million litres of sewage every day. The Bihar Rajya Jal Parishad, the nodal agency, has the capacity to treat only 100 million litres of waste per day. The rest 100 million litres of untreated dirty water enters the river every day through 30 drains in the city.

I have an occasion of going around the Varanasi City. The Varanasi City has open drains and they enter the River. That is the situation why that River has been so polluted. Only at Allahabad, I found a difference when the Yamuna meets the Ganga. Otherwise, from Kanpur, all along the Ganga River Basin, the river bed has been turned into a sewerage. That was our impression and that is what we had expressed....(*Interruptions*) I am the only speaker from my Party.

MR. CHAIRMAN : At Seven of the Clock, we have to take up the reply. Eight more speakers are yet to speak. That is why, I am requesting you to be very brief. You please come to the point. We will start the Zero Hour after the reply at Seven of the Clock.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : Sir, the sprawling river basin accounts for a fourth of the country's water resources and is home to more than 400 million people. Recently, the World Bank has approved US \$ one billion as credit and loan to support India's effort to clean up the Ganga Basin. I hope the hon. Minister will throw some light on that. The project will support the National Ganga River Basin Authority in building the capacity of its nascent operational level institutions so that they can manage the long-term Ganga clean-up and conservation programme.

In April, Union Cabinet Committee on Economic Affairs has approved a Rs.7,000 crore project to clean the Ganga, where the Centre's share would be Rs.5,100 crore and that of the Governments of Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand and West Bengal would be Rs.1,900 crore.

I would like to raise two issues – one is the Thames River Restoration Trust which has come out in support, and has tied up with the Worldwide Fund for Nature and Peace Institute Charitable Trust to work for restoration of a 300 km. stretch of the Ganga and the Yamuna on both sides of the banks. The United Kingdom's Environment Agency Thames Region will provide guidance in the endeavour. I think, the Minister, while replying would also throw some light because we are only discussing about the degradation of the river, but as to what steps have been taken and as to what are the difficulties in actually utilising this Fund, needs to be said. Today, funds are not a problem in our country. It is the proper monitoring and utilisation which are great issues.

Mrs. Tandon mentioned about the leather industries of Kanpur and nearby areas. Nearly 50 per cent of the leather processing units in the Ganga river basin are located in Uttar Pradesh.

MR. CHAIRMAN : She has already mentioned this point. Many other hon. Members too spoke about this issue.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : She mentioned about Unnao but it is also about Jajmao and Banthar. These two areas also needs to be looked into. I think, as hon. Minister of Environment and Forests, she would be aware that there is a need to change the technology which is required. The Committee has also recommended in this regard. That technology should have been taken up within two years time but that has not happened. Hence, I urge upon the Government that it needs to provide a certain amount of funding from financial institutions to those industriesâ€¦ (*Interruptions*) I would conclude.

There is a need to provide financial backup from financial institutions to those industries and just by sermonising them - you do this or do that – it will not happen. Unless adequate backup support is provided, and also the State Governments should look into that aspect.

Before I conclude – these are the last lines I would say - I would say that there is a need to monitor the river water constantly and take steps to make it pure for human consumption. It needs *Bhagirath Prayas* – as it was at one point of time, it was needed to bring the river Ganga from the Heavens - today, to clean up that river, you have to do a *Bhagirath Prayas*. Allocation of money is not all. Regular monitoring is necessary. The Centre and respective State Governments have

to work together and the Urban Development Ministry and also of respective State Governments have to work in tandem so that they can play a greater role. Therefore, I would urge upon the Government that it is necessary that a cohesive attempt has to be made. At the same time, I would also urge the Government and the Prime Minister to hold this meeting at least every quarterly so that one can proceed with the matter.

***SHRI P.T. THOMAS (IDUKKI):** At the outset I am fully supporting the issue raised by hon'ble Rewati Raman Singhji about River Ganga, the heart of India.

According to our first Prime Minister Pandit Jawaharlal Nehru, Ganga is not merely a river but it is a continuing history from time immemorial to the present about the ups and downs of the history of our country.

It is being believed that river Ganga is brought to the earth by the legendary Bhagirathi. Ganga is not only a river but it is a part and parcel of our culture and heritage.

Even though I am from the extreme South of our country, I am also concerned about the well being of the holy river Ganga. Today river Ganga is fully polluted due to careless activities done by tens of thousands of inhabitants who are living in the banks. I am also requesting the Uttarakhand Government to control all kinds of inhuman activities which are going on now-a-days. In this occasion, I would like to bring to the notice of the Hon'ble House that protecting Ganga is very important.

I am also pointing out one important issue relating to the water sharing of Kerala with Tamil Nadu. In the year 1886, the Mullaperiyar Dam was constructed across the river Periyar and till now we, the Keralites, are giving all water to Tamil Nadu. But today, the dam has completed 116 years and became very old. People of Kerala are now demanding to construct a new dam at Mullaperiyar. But Tamil Nadu Government is not considering the matter. Today they are not at all bothered to ensure security to the lives of millions of people of Kerala.

I am inviting the attention of the hon'ble House to the issue of Mullaperiyar Dam. It is one of the major issues now in Kerala as well as in Tamil Nadu. The

* Speech was laid on the Table

Kerala Chief Minister, Hon'ble Oomen Chandy undoubtedly cleared "we are ready to give water to Tamil Nadu, we only consider the safety of our people".

He also put forth a slogan "Water for Tamil Nadu safety for Kerala". When we are discussing about the importance of Ganga river, we must also consider other rivers like Mullaperiyar.

If something untoward happens, the lives of more than 35 lakhs of people will be in danger. Therefore, I humbly request you to consider this issue as an important national problem. While we are discussing about river Ganga, the issue of Mullaperiyar Dam is also may be considered. Mr. Chairman, not only Ganga, but also Mullaperiyar issue should be considered for a national consensus.

All kinds of protections are needed for all the rivers of our country.

ओशी कपिल मुनि कस्वारिया (फूलपुर): गंगा नदी के विषय में उठाये गये विषय के साथ अपने को संबद्ध करता हूँ।

गंगा नदी की पवित्रता के संबंध में पूरा सदन चिंतित है। आज की स्थिति यह है कि गंगा नदी में छोटे एवं बड़े शहरों की गंदगी को सीधे तौर पर गंगा नदी में डाला जा रहा है, मिलों, टैन्करियों के गंदगी भरे पानी को सीधे गंगा नदी में डाला जा रहा है। शहरों व मिलों में पानी साफ करके गंगा नदी में डालने हेतु जो ट्रीटमेंट प्लांट (S.T.P.) लगाये गये हैं वह क्षमता से बहुत छोटे हैं। उन सभी शहरों में क्षमता वृद्धि के साथ ट्रीटमेंट प्लांट लगाने हेतु सरकार को कड़े कदम उठाने की आवश्यकता

है। गंगा नदी में बनाये गये सभी बांधों को समाप्त करके गंगा नदी के स्वच्छ जल के प्रवाह को निरन्तर प्रवाहित करने हेतु आवश्यक कदम उठाने हेतु सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है।

* Speech was laid on the Table

ओशी जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): मैं आज एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। भारत में गंगा नदी जीवनदायनी एवं मोक्षदायनी मानी जाती है। आज भी गंगा नदी के कारण भारत की उर्वरा शक्ति किसानों के लिए है। गंगा नदी का जल देश के लिए जीवनधारा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से गंगा जल के दोहन एवं प्रदूषण के कारण आने वाले समय में गंभीर प्रश्न विन्ध उपस्थित हो जायेगा। अभी तक हिमालय के कारण देश की प्रकृति एवं पर्यावरण के संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से हिमालय में वनों का कटाव हो रहा है। तथा दूसरी तरफ अवैध खनन हो रहा है। जिसके कारण मानवता के लिए खतरा उत्पन्न हो रहा है। यदि भविष्य में अवैध खनन एवं वनों का कटाव जारी रहा तो हम लोगों को विनास की तरफ जाने से कोइ रोक नहीं सकता है।

वर्तमान समय में गंगा हिमालय से निकलने के बाद हरिद्वार से ही प्रदूषित होना शुरू हो जाती है। हरिद्वार से कानपुर तक आते-आते गंगाजल आचमन करने लायक नहीं रह जाता है। जबकि गंगा का पानी एक तरफ किसानों के लिए उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। तथा आज भी देश में गंगा के किनारे हरिद्वार से उत्तरप्रदेश, बिहार, एवं वेस्ट बंगाल के गंगासागर के किनारे दोनों तरफ की जमीन बहुत ही उपजाऊ है। इस क्षेत्र में सिंचाई के साधन होने के कारण खेतों में रिकार्ड उत्पादन हो रहा है। भारत में गंगा नदी केवल सिंचाई के लिए ही प्रयोग में नहीं आती है बल्कि गंगा एक पवित्र नदी के रूप में भारत के जन जीवन में आस्था का केन्द्र बिंदु बन चुकी है। आज भारत के हर घरों में धार्मिक अनुष्ठान के लिए पूजा गंगा जल से ही होती है। लेकिन लगातार गंगा में प्रदूषण बढ़ रहा है। सबसे ज्यादा कानपुर एवं उन्नाव के टेनरी (चमड़े के कारखानों) के कारण गंगा का जल प्रयोग करने लायक नहीं रह गया है। इस दिशा में पिछले दिनों भारत सरकार ने गंगा एक्शन प्लान की योजना स्वीकृत की जिसमें गंगा को प्रदूषण से मुक्त कराने हेतु गंगा के किनारे बसे शहरों के प्रदूषण से गंगा नदी को मुक्त कराने के लिए ट्रीटमेंट प्लांट एवं प्रदूषित सीवर एवं जल को गंगा नदी से अलग करने की भी कोशिश की गयी। लेकिन इसके बावजूद गंगा नदी में लगातार प्रदूषण बढ़ रहा है। पिछले दिनों प्रधानमंत्री डा० मनमोहन सिंह ने गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी घोषित किया। देश के आम जनमानस को काफी खुशी हुयी लोगों के अंदर काफी उम्मीद की किरण बनी थी। इसके बावजूद बढ़ते हुये प्रदूषण के कारण आज गंगा नदी का जल

* Speech was laid on the Table

पानी पीने योग्य नहीं रह गया है। आज सदन में राजनीति से उपर उठ करके सभी को चिन्ता का संज्ञान लेकर के न केवल भारत सरकार को बल्कि राज्य सरकारों को परस्पर समन्वय स्थापित करके सामंजस्य स्थापित करके गंगा मां को बचाने का प्रयास होना चाहिये। यदि गंगा नदी को हम बचाने में कामयाब होंगे तभी भारत को अन्न के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम हो सकेंगे। तभी व्यवहारिक रूप से गंगा नदी जीवनदायनी होगी। लेकिन आज सारे प्रयासों के बावजूद गंगा नदी के अस्तित्व के समक्ष प्रश्न चिन्ह उपस्थित है वहीं दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश की बहुजन समाज पार्टी की सरकार ने गंगा एक्सप्रेस वे नामक परियोजना स्वीकृत करने का निर्णय लिया है। उक्त परियोजना में गंगा के किनारे, सड़क का निर्माण होगा तथा उस सड़क के किनारे बड़े-बड़े नगर बनाये जायेंगे। जहां एक तरफ हम गंगा के प्रदूषण को रोकने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ गंगा एक्सप्रेस वे परियोजना आने के बाद तो शायद गंगा नदी के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जायेगा। जबकि पूरी दुनिया में केवल गंगा एक ही नदी है जिसे गंगा मां कहते हैं। इसलिए तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व0 राजीव गांधी ने गंगा एक्शन प्लान की योजना को लागू किया जिससे गंगा को प्रदूषण से मुक्त किया जा सके। उसमें भारत सरकार का लगभग एक हजार करोड़ रूपया खर्च भी हो चुका है फिर भी स्थिति जस की तस ही बनी हुई है। दूसरी तरफ हिमालय पर्वत का भी जिस तरह से दोहन हो रहा है अवैध खनन एवं वनों के कटाव के कारण लगातार हिम स्खलन हो रहा है। इसलिए भारत एवं मानवता को बचाने के लिए गंगा नदी एवं हिमालय को खनन एवं प्रदूषण से मुक्त करने के लिए ठोस उपायों की जरूरत होगी।

श्री सानघुमा खुंगुर बैसीमुथियायी (कोकराझार): सभापति जी, आपने मुझे एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गंभीर विषय पर अपनी राय प्रकट करने के लिए समय दिया, उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ। दुनिया में जितने भी बोडो मूल के लोग हैं, सभी गंगा नदी को माँ के रूप में मानते हैं। गंगा नदी का नाम हमारी बोडो भाषा का "गंगानाथ" यानि "गंगा" शब्द से उत्पन्न हुआ है।

गंगा का मतलब जिस चीज को पीने से प्यास निकल जाती है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जितनी भी हिंदुस्तान में नदियां हैं, इन्हें तथा पहाड़, पर्वत और वन जंगल को बचाने के लिए सरकार की तरफ से बहुत सख्त कदम उठाने की जरूरत है। सरकार इतना पैसा खर्च करने के बाद भी इन नदियों को बचा नहीं पाई है, इसलिए यह एक बहुत गंभीर मामला है। इसलिए मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि केवल गंगा और यमुना के लिए ही नहीं वरन् हमारे असम की जो बृहत "ब्रह्मपुत्र" नदी है और उसकी उप नदियां हैं, उन सभी को भी बचाने के लिए ब्रह्मपुत्र रिवर बेसिन अथॉरिटी बनाने की जरूरत है। I would like to appeal to the Government of India, through you, Sir, to set up the Brahmaputra River Basin Authority so as to help preserve and project the River Brahmaputra and all the rivers and tributaries within the Bodoland area. We all know that the Chinese Government has been constructing a good number of dams on the River Brahmaputra at different locations inside Tibet. I would like to know as to why no action has been taken by the Government of India to object to this kind of very dangerous anti-India river projects. इसलिए मैं आपके द्वारा मंत्री जी से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि हिंदुस्तान में जितनी इंटरडीज हैं, उनकी सुरक्षा के लिए सीआईएसएफ बनाया गया है, उसी की तर्ज पर हिंदुस्तान में जितनी नदियां हैं, पहाड़ हैं, जंगल हैं, उन्हें बचाने के लिए नेशनल फॉरेस्ट एंड एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन फोर्स रेंज करने की बहुत जरूरत है। यह बहुत गंभीर मामला है। So, I would like to appeal to the Government of India, through you, to take appropriate steps to help raise a National Forest and Environment Protection Force on the line of CISF.

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): सभापति जी, मैं आपको इस बात के लिए अपनी तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आपने मुझे समय दिया। गंगा को माता के रूप में हम जानते हैं और मुझसे पहले जितने भी वक्ताओं ने अपनी बातों को रखा, लगभग सारे लोगों ने गंगा के धार्मिक महत्व और उसके उद्गम का इतिहास और उससे होने वाले फायदे की चर्चा की।

महोदय, गंगा को राष्ट्रीय नदी का दर्जा प्राप्त है लेकिन गंगा केवल एक नदी मात्र नहीं है, गंगा इस देश के करोड़ों लोगों की आस्था का प्रतीक है। गंगा इस देश के करोड़ों लोगों की सभ्यता की जननी है, गंगा इस देश की जीवनधारा है और गंगा इस देश के करोड़ों लोगों के जीवन-चापन का सहारा भी है। चाहे मछुआरे हों या गंगा के किनारे रहने वाले करोड़ों किसान हों, उनके जीवन-चापन का सहारा भी गंगा ही है। लेकिन एक साजिश के तहत गंगा नदी को किसी न किसी रूप में बाधित करने का षडयंत्र है। मैं सरकार को आपके माध्यम से आगाह करना चाहता हूँ और मैं यह कहना चाहता हूँ कि गंगोत्री से लेकर गंगा नदी 25 किलोमीटर की लम्बाई में है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि गंगोत्री से ऋषिकेश तक की दूरी 235 किलोमीटर है, लेकिन इन 235 किलोमीटर में अभी तक गंगा की मुख्यधारा को विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं को बनाकर उनका निर्माण कर हाइडल प्रोजेक्ट्स बना कर 115 किलोमीटर गंगा की मुख्यधारा को अभी तक बाधित कर दिया गया है। जहां अब गंगा नदी सूखी नदी के रूप में है, पहले जहां अद्विगल गंगा बहती थी। एक फिल्मी गाने को मैं उटत कर रहा हूँ - गंगा तेरा पानी अमृत झर-झर बहता जाए। अगर स्थिति में परिवर्तन नहीं हुआ और सरकार समय पर नहीं चेती, तो गाने के बोल का कोई मतलब नहीं रह जाएगा।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): सभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूँ कि इसका रिप्लाय मंत्री जी कल सदन में दें।

MR. CHAIRMAN : Let him speak.

श्री मुलायम सिंह यादव : माननीय सदस्य बोल सकते हैं, हमें कोई ऐतराज नहीं है। लेकिन इसका रिप्लाय कल होना चाहिए। आप वेयर कर रहे हैं, आप बोल दीजिए।

MR. CHAIRMAN: Let some more Members speak and then we will see.

श्री सुशील कुमार सिंह : सभापति महोदय, मुझे कुछ समय और देने की कृपा करें, क्योंकि बीच में मैं डिस्टर्ब हो गया था। केवल गंगा नदी ही प्रभावित नहीं हो रही है, बल्कि गंगा की जितनी सहायक नदियाँ हैं, चाहे मंदाकनी हो, अलकनंदा हो, सारी नदियों के ऊपर खतरा मंडरा रहा है। विकास के नाम पर, ऊर्जा के नाम पर गंगा को जिस तरह से बाधित किया जा रहा है, गंगा को प्रभावित किया जा रहा है और गंगा के साथ-साथ हिमालय को जिस तरह से प्रभावित किया जा रहा है, हिमालय में सुंगों को खोदा जा रहा है।

MR. CHAIRMAN: All of you wanted to finish it early. There are four more Members to speak.

श्री सुशील कुमार सिंह : महोदय, अभी तो भूमिका ही बनाई थी कि आपने घंटी बजा दी और बीच में ही व्यवधान हो गया। महोदय, मैं कह रहा था कि गंगा, यमुना, मंदाकनी, अलकनंदा और जो दूसरी सहायक नदियाँ हैं और हिमालय की पर्वत श्रृंखला सभी में बिजली उत्पादन के नाम पर हाइडल प्रोजेक्ट्स बनाने के नाम पर, जैसा हमारे नेता शरद जी ने कहा कि हिमालय जिंदा पहाड़ है और यह भूकंप से प्रभावित होने वाला जोन भी है, सिस्मिक जोन है, उसे खोद-खोद कर सुंगे बनाई जा रही है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

श्री सुशील कुमार सिंह : महोदय, इस तरह से गंगा और गंगा के उद्गम स्थल हिमालय को इस प्रकार से नष्ट किया जा रहा है कि आने वाली पीढ़ी हम लोगों पर रोएगी और कहेगी कि समय रहते हम लोगों ने कुछ नहीं किया। इस प्रकार से देश की धरोहर, गंगा केवल नदी मात्र नहीं है, बल्कि देश की धरोहर है। बिजली उत्पादन का बड़ा-बड़ा सपना हाइडल प्रोजेक्ट्स के नाम पर दिखाया जाता है, बिजली कम्पनियों द्वारा बताया जाता है कि हम एक हजार मेगावाट बिजली की परियोजना लगा रहे हैं। लेकिन जब उस परियोजना से उत्पादन होता है, तो किसी परियोजना से तीस प्रतिशत से ज्यादा का उत्पादन नहीं होता है। आर्टीआई से मंगाया गया यह आंकड़ा है।

MR. CHAIRMAN: Please conclude now. I have called the name of Shri Tarun Kumar Mandal.

श्री सुशील कुमार सिंह : महोदय, निजी कम्पनियों को एक छूट है, जिससे कि वे स्वयं सर्वे करें और वे सरकार को शुल्क जमा करते हैं।...(व्यवधान) महोदय, रिप्लाय बाद में होगा, मुझे अपनी बात कहने दी जाए। यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। निजी कम्पनियों को छूट है कि वे स्वयं सर्वे करें।

परियोजना बनाएं और अनुमोदन लेकर खुद काम शुरू कर दें।

MR. CHAIRMAN : Now, Dr. Tarun Mandal to speak now.

Except his speech, nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

MR. CHAIRMAN: You have taken six-seven minutes. Already your party members spoke.

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Dr. Tarun Mandal, you can speak now. Nothing else will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

MR. CHAIRMAN: Already your leaders spoke.

...(Interruptions)

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): ऐसा नहीं है कि केवल जनता को ही चिंता है। खुद सीएजी ने कहा है कि इस तरह से एशिया में गंगा बेसिन और हिमालय के क्षेत्र में अगर और पावर प्रोजेक्ट को बनाने से रोका नहीं गया तो गंगा को और नुकसान होगा।

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

***श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर):** सदन में गंगानदी और हिमालय के निर्गम दोहन के कारण इनके अस्तित्व के संकट के बारे में 193 के अंतर्गत चर्चा की जा रही है। गंगा और हिमालय हमारे लिए केवल नदी और पर्वत नहीं हैं, सदियों से यह करोड़ों हिन्दुओं के आस्था के विषय रहे हैं। इसलिए भी यह चर्चा अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। गंगा के किनारे हमारी सभ्यता विकसित हुई है। हिमालय से निकलने वाली गंगा नदी 2525 कि.मी. लंबी बहती है। गंगा विश्व की सबसे बड़ी नदियों के अग्रिम 20 सूची में शामिल है और अब इसका शुमार विश्व के सबसे अधिक प्रदूषित नदियों में हो रहा है। गंगा स्नान करने की इच्छा धारण करने वाला आस्थावान हिंदु आज इसके प्रदूषण से आतंकित हो रहा है। इसी स्तर पर गंगा नदी का प्रदूषण जारी रहा तो भविष्य में इस नदी के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है। गंगा नदी में इसके किनारे पर बने बस्तियों का मलमूत्र विसर्जन, कारखानों का रसायन मिश्रित जल प्रवाहित करने के कारण गंगा नदी प्रदूषित हो रही है। गंगा नदी का देश के जनजीवन में स्थान को देखते हुए इसे शुद्ध रखने का दायित्व सरकार का है। लेकिन सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों के साथ हमें भी इसके तट पर बसने वाले लोगों में चेतना जगानी पड़ेगी। गंगा पहले की तरह शुद्ध, निर्मल बनी रही तो ही इसका पतितपावन स्थान बरकरार रह सकता है। इसलिए सरकार गंगा जल शुद्धीकरण के लिए प्राथमिकता के साथ कठोर कदम उठाये। केवल गंगाजल शुद्धीकरण के लिए धनराशि आवंटन और खर्च का हिसाब देने सेबात नहीं बनने वाली तो गंगा नदी को प्रत्यक्ष रूप में शुद्ध करनेका भी कार्य होना चाहिए। गंगा नदी के किनारे रहने वाले लाखों, करोड़ों लोगों का जीवन, रोजगार भी इस पर आश्रित रहने से सरकार को इस पर ध्यान देना होगा।

आज हम गंगा और हिमालय के प्रदूषण के कारण अस्तित्व के संकट पर चर्चाकर इसके निराकरण हेतु सरकार द्वारा उचित कदम उठाने के लिए ध्यान आकर्षित कर रहे हैं, लेकिन देश में लगभग सभी नदियों का जल दूषित हो रहा है। देश में जनसंख्या के फैलाव के साथ तथा बढ़ते औद्योगिकीकरण के कारण नदियों का जल लगातार दूषित हो रहा है। नदियों को जीवनदायिनी कहा जाता है। लेकिन आज अनेक नदियां प्रदूषण के कारण नष्टप्राय हो रही हैं। पहले नदियों के जल से खेतों को सींचा जाता था, लेकिन आज किसानों की अपेक्षा उद्योगों को अधिक तरजीह देने से उद्योगों के द्वारा रसायन मिश्रित जल नदियों में प्रवाहित करने से नदियां प्रदूषित हो रही हैं, इस पर निर्भर किसान, मछुआरों का भी जीवन संकट में पड़ गया है। मेरे निर्वाचन क्षेत्र में वर्धा, इरई, उमा, झरपट नदियों की स्थिति तो बद से बदतर हो रही है। चंद्रपुर यह देश के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में दूसरे नंबर पर है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार जिले के 130 उद्योग अतिप्रदूषणकारी हैं। जिले में कोयला खानें, बिजली उत्पादन केन्द्र, सीमेंट, कागज कारखानों, कोल वॉशरीज, लोह उद्योग के द्वारा अपने रसायन मिश्रित प्रदूषित जल को नदियों में छोड़ने के कारण नदियों का जल दूषित हो रहा है। हमारे यहां कोल इंडिया की संलग्न कंपनी वेस्टर्न कोल फ़िल्ड्स के द्वारा कोयला उत्पादन के लिए कोयला खाने चलाई जा रही हैं। अब अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर खुली खदानों के द्वारा कोयला उत्पादन करनेके कारण बड़े पैमाने पर ओ.बी. डम्प निकलता है। कोयला उत्पादक कंपनी वे.को.ली. द्वारा यह ओ.बी. डम्प नदियों के किनारे पर डालने से नदियां संकरी हो रही हैं। फलस्वरूप यहां पर जल प्रदूषण के साथ कृत्रिम बाढ़ की स्थिति बनती जा रही है। स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत से वे.को.ली. द्वारा नदियों के अनुचित दोहन करने का मामला सामने लाने के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड कारवाई करने से कतराता है। इससे स्थिति बिगड़ रही है। नदियों का जल दूषित होने से नदियों के जलतर नष्ट हो रहे हैं और मत्स्य व्यवसायिक मछुआरों का जीवन भी इससे प्रभावित हो रहा है। कोयला उद्योगों की तरह राज्य सरकार ने कोयला आधारित औष्णिक विद्युत निर्माण संयंत्रों को इन नदियों के किनारे अपने संयंत्र स्थापित करने की अनुमति दी है। आज वर्धा नदी पर करीब 25 संयंत्रों को अनुमति देने से भविष्य में वर्धा नदी का अस्तित्व नष्ट होने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

महाराष्ट्र में राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के नेशनल वॉटर मानिट्रिंग प्रोग्राम के अंतर्गत हर महीने नदियों के जल की जांच करने की बाध्यता है। लेकिन इसका पूरी तरह अनुपालन नहीं किया जा रहा है। अगर प्रदूषण नियंत्रण मंडल की नीति के अनुसार जांच की गई तो कई उद्योगों के प्रदूषण के खिलाफ कार्रवाई हो सकती है और नदियों को और प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है।

देश में शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है, इसके कारण बढ़ती आबादी को जलापूर्ति हेतु नदियों के जल का प्रयोग हो रहा है। लेकिन अगर नदियां ही दूषित होंगी तो इसमें प्रदूषण के कारण वलोरिन, कार्बन, मैंगनीज, मवर्चुरी का मानवी शरीर पर कु-प्रभाव पड़ने की संभावना व्यक्त की जा रही है। दूषित जल के कारण अनेक जलजनित रोगों के संक्रमण बढ़ रहा है। प्रदूषण के कारण नदियों का जल दूषित होने से हमारे यहां का सिंगाड़ा तथा मत्स्य उद्योग पर कु-प्रभाव पड़ा है। इस पर निर्भर मछुआरे बेरोजगार हो रहे हैं और किसान भी अपने खेतों को सिंचित कराने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं। इसलिए मैं सरकार से आग्रह करना चाहूंगा कि गंगा नदी की तरह देश की सभी नदियों के जल शुद्धीकरण की विशेष योजना बनायें और उद्योगों को रसायन मिश्रित जल नदियों में प्रवाहित करने पर कड़ी रोक लगाये। सरकार के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के द्वारा नदियों के जल की जांच कर प्रदूषणकारी उद्योगों पर मानकों की अवहेलना करने के लिए उन पर कड़ी कार्रवाई करने के लिए उन्हें आवश्यक निर्देश देने की मांग करता हूं।

हमारे आस्था की प्रसिद्ध पावक गंगा जी के जल को निर्मल तथा शुद्ध कराने के लिए सरकार द्वारा प्राथमिकता देने के साथ अन्य नदियों के अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए भी ध्यान देने ऐसी अपेक्षा करता हूं।

डॉ. तरुण मंडल (जयनगर): सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। हिमालय और गंगा के साथ हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति जुड़ी हुई है। हिमालय और गंगा नदी के साथ हमारे देश का साहित्य, गाना और कविता जुड़ी है। कुछ दिन पहले महान संगीतकार भूपेन हजारिका जी की मृत्यु हुई, उन्होंने इस विषय पर गाना तैयार किया था -

बिसतीरणो दुपारे ओशोंको मानुशेर हाहाकार शुनेओ,

निशोल्दे निरोबे ओ गंगा तुमी बोइचो कानो।

यह गाना सारे देश में बंगाली और असमिया भाषा में गाया था। यह बात हम जानते हैं कि दुनिया की सभी सभ्यताएं नदियों के साथ जुड़ी हैं। सभ्यता का विकास नदियों के किनारे ही हुआ था। गंगा नदी की बात सिर्फ हिंदू धर्म की नहीं है, चाहे कोई हिंदू धर्म का हो, इस्लाम धर्म का हो, किरिस्चियन धर्म का हो या सिख धर्म का हो, सभी का संबंध इस नदी के साथ है। सब इस नदी से फायदा लेते हैं, इससे जीवन लेते हैं। लेकिन आज नदी में बहुत प्रदूषण हो रहा है जो नदी को एक्सप्लाइट कर रहा है। यह कोई आम जनता नहीं कर रही है, उनके कारण हो रहा है जिन लोगों के पास पैसा है, जो उद्योगपति हैं, जिन्हें नियम मानना चाहिए वे नहीं मानते हैं, नियम तोड़ते हैं, प्रशासन, पुलिस और कानून को खरीदकर काम करते हैं। इसके लिए सशक्त रूप से कानून बनाना और लागू करना चाहिए।

हमारे क्षेत्र सुंदरवन में नदी के पानी की चोरी कर ली गई है। वहां सिर्फ पानी नहीं नदी भी चोरी की है, मछली का व्यवसाय करने के लिए नदी को बांध कर, काट कर तालाब बनाया गया। सुंदरवन हमारा क्षेत्र है, आपने सिंगूर का नाम सुना होगा, टाटा कंपनी के लिए जमीन दी गई थी, वहां दो नदियों पर भी कब्जा कर लिया था। तिरुता नदी जो बांग्लादेश जाती है, इच्छामती नदी के ऊपर ब्रिक (Brick) विलन बनाने के कारण पूरी नदी खत्म हो चुकी है। मैं कहना चाहता हूँ कि हमारे देश की सभी नदियों का प्रोटेक्शन होना चाहिए। यह हमारे परिवेश के लिए बहुत जरूरी है, दुष्परिणाम रोकने के लिए बहुत जरूरी है। बांग्लादेश में जो नदी जा रही है, उसके साथ भी ऐसा समझौता होना चाहिए जिससे हमारे देश को पड़ोसी देश से खतरा न हो। जैसे तिरुता नदी समझौता है वैसे तिपाईमुख बांध बन रहा है, इसका भी बराबर समझौता होना चाहिए। मैं कुछ दिन पहले बांग्लादेश गया था, वहां एंटी इंडियन फिलिंग्स तैयार हो रही हैं, लेकिन उन्हें इसकी पूरी जानकारी नहीं है। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार और मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वह इसे देखें और हमारे देश की गंगा और अन्य नदियों का प्रोटेक्शन रोककर जनता की भलाई करें।

19.00 hrs.

SHRI PREM DAS RAI (SIKKIM): Sir, thank you very much for allowing me to take part in this discussion under Rule 193. The issue that I would like to flag here is that we have reached a stage where there are finite resources. All the resources have become absolutely finite. There is no such thing as having infinite water.

MR. CHAIRMAN : Just a minute. Hon. Members, we have extended the time upto 7 o'clock. As the two hon. Members are yet to speak, if you permit, then we will extend the House further.

श्री रेवती रमण सिंह (इलाहाबाद): सर, कल कर लीजिए, अभी मिनिस्टर साहब को भी रिप्लाय करना है।

MR. CHAIRMAN: First, let the hon. Member to speak. We will extend the House upto 8 o'clock. I hope the hon. Members will agree.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: The time of the House is extended upto 8 o'clock.

SHRI PREM DAS RAI: Sir, most of the Members who have discussed this issue before me have actually concentrated on the exploitation side. I would like to actually bring the attention of the House to the area where we are looking at the Himalayas. Since I come from a mountain region, I think, the Himalaya needs urgent attention.

Let me say a couple of things. First, the World Climate Change Conference has actually talked about a two degree limit to increase in temperature by 2050. But to tell you that at 2 degrees, the Himalayas would actually be increasing its temperature around that by about 4 degree. That is the reason why, lot of snowmelts are actually happening and the water resource that comes down from Himalayas during the lean season is becoming more and more scarce.

One can also see this in river Teesta. Yesterday, there was a programme on NDTV in which they have shown and argued that the river Teesta is actually drying up. It is because that the river Teesta emanates from the Kanchenjunga biosphere. The Kanchenjunga is the highest peak and around that we have glaciers which are about 750 square kilometres. The shrinkage in this glacier area is one of the highest in the country.

My State, the State of Sikkim, has actually been the first State to actually commission a Report on the glaciers as to how fast they are receding. I think, we will be getting the results very soon. What I would like to argue here is this. There is a much greater need to look at the whole Himalayan range more holistically. I think, for that, the Planning Commission has done well by setting up a working group on mountains. This working group on mountain needs to look at this entire issue of the Himalayan range and the precipitation of the snow and ice on our mountains. We also need to take this up more forcefully in the climate change talks.

I would seek the indulgence of the hon. Minister to answer these questions because this is really an important issue.

With these words, I conclude.

श्री प्रदीप टट्टा (अल्मोड़ा): सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने इस महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया। मैं उसी क्षेत्र से आता हूँ, जहां से गंगा निकलती है। अभी यहां चर्चा हुई कि उत्तराखंड की सरकार ने ही कुछ किया है और इतने बांध बनाये हैं। यह बहुत लम्बे समय की बात है। आज मैं देख रहा था, जो मेरे पास लिस्टेड हैं, उत्तराखंड में 194 छोटे-बड़े डैम बन रहे हैं और दूसरी रिपोर्ट में मात्र अरुणाचल प्रदेश में 168 डैम का प्रोजेक्ट है। मैं कहना चाहता हूँ कि इन्हें केन्द्र सरकार भी बना रही है और राज्य सरकारें भी बना रही हैं। गंगा नदी पर टिहरी डैम बना, जो दुनिया के छः बड़े डैम में अपना स्थान रखता है। इसके कारण वहां से हजारों-लाखों लोग उजड़े। टिहरी जिला आज भी पूर्णतः में मामले में देश के सबसे पिछड़े जिलों में आता है। वहां से जो हजारों-लाखों परिवार उजड़े, वे ऋषिकेश, हरिद्वार और देहरादून में विकास के मामले में बहुत पिछड़े हुए हैं, दर-दर की लोकरें खा रहे हैं और आज भी लड़ रहे हैं। हमारे क्षेत्र में इस बात की चिंता है कि हम सब लोग गंगा नदी को मां भी कहते हैं।

लेकिन आज पूरे हिमालय क्षेत्र की नदियों को बचाने का संकट है। हिमालय जिस तरह से पिघल रहा है, वहां की नदियों में पानी नहीं है। उन नदियों में रन ऑफ दी रिवर प्रोजेक्ट्स बन रहे हैं। उन नदियों में बड़े-बड़े डैम प्रस्तावित हैं। मैं केन्द्र सरकार को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ कि उन्होंने भैरोंघाटी, लोहाड़ी, नागपाला और पालामेरी प्रोजेक्ट को बंद किया। उनकी मंजूरी वापस ली और वहीं उत्तराखण्ड की सरकार ने 900 मेगावाट बिजली का प्रोजेक्ट प्रस्तावित है। एक तरफ ड्रामा किया कि गंगा की पवित्रता के लिए इन परियोजनाओं को बंद किया जाए। कुछ पर्यावरणविद् आए और आमरण अनशन पर बैठे और वहीं उत्तराखण्ड सरकार की 900 मेगावाट बिजली प्रस्तावित है। मेरे संसदीय क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा डैम, पंतेश्वर डैम प्रस्तावित है, वह पता नहीं कब बनेगा। जो 4000 मेगावाट और पूर्णागिरी पर 1400 सौ मेगावाट प्रस्तावित है। क्योंकि यह भारत और नेपाल के बीच का मसला है इसलिए हमारी चिंता है कि कल को अगर वह डैम बनेगा तो हजारों लोग कहां जाएंगे?

पिथौरागढ़ जिले में पर्यावरण की क्लीयरेंस नहीं है लेकिन डैमों के ऊपर रन ऑफ दी रिवर प्रोजेक्ट बनाने की तैयारी हो रही है। बिना किसी क्लीयरेंस के सैंकड़ों किलोमीटर रोड़ और टनल बन जाती है। एक तरफ फॉरेस्ट कंज़र्वेशन एक्ट में फॉरेस्ट की थोड़ी सी जमीन को भी गैर-फॉरेस्ट कार्यों के लिए परमिशन नहीं मिल पाती है। कई वर्षों तक सड़कें नहीं बन पाती हैं वहीं दूसरी तरफ डैम बनाने वाली कंपनियां पिथौरागढ़ जिले के अंदर हैलीकॉप्टर से अपने इक्विपमेंट भेज रही हैं। सरकारों को सोचना चाहिए कि नदियां सतत हैं, बहती हैं इनका अस्तित्व बचाना चाहिए। यह सवाल उत्तराखण्ड का ही नहीं है, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और कर्नाटक लोग जिनका जीवन नदियों पर निर्भर करता है उनका भी है। आज उसको बचाने की जरूरत है। हिमालय से नदियां निकल रही हैं और हिमालय के लोग प्यासे हैं, उनके खेत प्यासे हैं। वहां की सड़कों और स्कूलों के लिए फॉरेस्ट कंज़र्वेशन एक्ट की परमिशन नहीं मिल पा रही है। लेकिन बड़े-बड़े डैम और रन ऑफ द

रिवर प्रोजेक्ट्स को परमिशन मिल रही है। दूसरा सवाल सिरिमिक जोन का है। हर साल जब भी बरसात का मौसम आता है, हमें लगता है कि आज पता नहीं कौन सी त्रासदी आएगी। पूरे राष्ट्रीय स्तर पर इस बात का आंकलन होना चाहिए कि हिमालय में जितनी नदियां निकल रही हैं, चाहे उतराखण्ड हो, हिमाचल हो, वहां उन नदियों में पानी कितना है। उसकी क्षमता कितनी है? लोगों के पीने की जरूरत पूरा कर सकती है? सिंचाई के लिए पूरा कर सकती है? बिजली तो बाद की बात है। सबसे बड़ा घोटला आज वहीं पर है कि नदियों में पानी नहीं है और बड़े-बड़े मेगा प्रोजेक्ट आप बना रहे हैं। इसलिए मैं फिर सरकार से मांग करूंगा कि संपूर्ण हिमालय में चलने वाले पॉवर प्रोजेक्ट्स के बारे में पुनर्विचार किया जाए।

श्री गणेश सिंह (सतना): गंगा नदी तथा हिमालय के अस्तित्व को जो खतरे उत्पन्न हुए हैं, आज सदन में उन पर चर्चा हो रही है। धन्य है वह देश जहां गंगा जैसी नदी प्रवाहित हो रही है और धन्य है वह देश जहां हिमालय जैसा पर्वत है। हमारे देश की प्राचीन मान्यता रही है कि गंगा को हम लोग माँ कह कर पुकारते हैं और हिमालय को हम लोग अपने देश का मुकुट कहते हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि आज दोनों का अस्तित्व खतरे में है। न सिर्फ इन दोनों का बल्कि मैं तो कहूंगा कि देश की सारी नदियों का अस्तित्व खतरे में है। देश की सभी नदियों का या तो सामाजिक महत्व है या धार्मिक महत्व है या आर्थिक महत्व है। उसके आधार पर देश ने मान्यता दी है। मैं मानता हूँ गंगा नदी जहां से निकलती है और जहां तक जाती है, वे बहुत भाग्यशाली लोग हैं। वहां की स्थिति को देश के दूसरे हिस्सों से तुलना जब मैं करता हूँ तो मुझे अलग सा दिखाई देता है। लेकिन जिस तरह से आज गंगा नदी प्रदूषित हो रही है वह चिन्तनीय है। कुछ लोगों का मत है कि नदी तो बांध बनाने के कारण या उद्योगों का जो प्रदूषित जल निकलता है या सिवर लाईन के मलबे के कारण वे प्रदूषित होती हैं या अन्य कारणों से वे नदियां प्रदूषित हो रही हैं। यह बिल्कुल सही बात है। देश ने पहले भी कानून बनाये हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन कानूनों का कभी प्रभावी उपयोग हुआ है। आज विण्डित करने की जरूरत है कि किन कारणों से हमारी नदियां प्रदूषित हो रही हैं? जहां तक मेरी मान्यता है कि छोटे-छोटे बांध बनाने से नदियों का प्रवाह बंद नहीं होता है, बल्कि उससे नदियां और पुनर्जीवित होती हैं। उससे हम बिजली भी बना सकते हैं। यह बात सही है कि पूरी तरह से जल का प्रवाह नहीं रोका जाना चाहिए। जल प्रवाहित होते रहना चाहिए। जिस तरह से बारिश कम होती जा रही है, जिस तरह से हमारी नदियों के पानी का जल स्तर घटता जा रहा है, उस नाते हमें कहीं न कहीं बांध बनाने की भी जरूरत है, लेकिन मेरा यह जरूर मानना है कि उसमें पानी का प्रवाह जरूर चलता रहना चाहिए। नदियों की रक्षा के लिए, उनकी सुरक्षा के लिए, उनके जीवन को बचाने के लिए केंद्र सरकार को बहुत प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है, कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की जरूरत है, कठोर कानून बनाने की जरूरत है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि जहां से गंगा नदी निकलती है और जहां समाप्त होती है, वहां तक के बीच में देखें कि कौन-कौन सी इंडस्ट्री लगी हैं, किन कारणों से वहां पर प्रदूषण का पानी आ रहा है, किन कारणों से नदी प्रदूषित हो रही है? उन पर सख्ती से रोक लगायें और उन पर कठोर कार्रवाई करें। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

ओशी रतन सिंह (भरतपुर): गंगा जी भारत की जीवन रेखा है। करोड़ों लोगों की आस्था व श्रद्धा का केन्द्र है। गंगाजल प्रदूषित नहीं हो इसके लिए समय रहते सभी उपाय करने की आवश्यकता है। गंगाजी जल-जीवन के साथ-साथ करोड़ों लोगों की जीविका का साधन है। वर्षा काल में बहुत अधिक पानी समुद्र में बहता है। स्वर्गीय राजीव जी ने गंगा शुद्धीकरण का विशेष अभियान चलाया था उनका स्वप्न था कि गंगा जल सदैव शुद्ध रहे। गंगा जी की भांति यमुना जी, राजस्थान की चंबल नदी सभी अतिक्रमण, प्रदूषण की समस्या से ग्रस्त है। महानदियों के किनारे, बहुत बड़ी आबादी प्यासी, सिंचाई साधनों से वंचित भी है। ईश्वर की मानव के इस जलशशि की देन का पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है।

सरकार से निवेदन है कि इन नदियों का संरक्षण किया जाये। पानी समुद्र में जाने से रोका जाये। बड़े-बड़े बांध बनाये जायें जिससे विद्युत उत्पादन हो, पेयजल पूर्ति हो मैं निवेदन करूंगा कि नदियों को लिंक किया जाय। चंबल पर धौलपुर में बांध बनाया जाये।

गंगा जी, यमुना जी महान श्रद्धा का केन्द्र हैं। वहां आने जाने के साधन सुलभ सहज होने चाहिए। सड़कों का सुदृढीकरण चौड़ीकरण, सेपटी वाल बनाना आवश्यक है। जिससे यात्री सुरक्षित

रहें।

* Speech was laid on the Table

MR. CHAIRMAN: Now, the hon. Minister

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Thank you, Sir...(*Interruptions*)

श्री हुवमदेव नारायण यादव : महोदय, जवाब तो कल हो सकता है।

अनेक माननीय सदस्य : महोदय, जवाब तो कल होना था।

MR. CHAIRMAN: Tomorrow, we have to take up one Calling Attention. Then, we have to pass three Bills also. Afterwards, we have to take up Discussion under Rule 193 also. So, tomorrow, if she is not in a position to reply, then we cannot get the reply. That may be the position. That is why I am asking her to reply, now.

...(*Interruptions*)

श्री गणेश सिंह : महोदय, क्वेश्चन ऑवर के बाद जवाब हो सकता है।

MR. CHAIRMAN: If she places the written speech, what is the use? If you want to listen to her today, after listening, you may also ask certain clarifications. If she places the reply on the Table tomorrow, it would not help as afterward there is no point in getting the reply and clarifications.

...(*Interruptions*)

श्री हुवमदेव नारायण यादव : महोदय, उस समय सब लोग यहां उपस्थित रहेंगे।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, please take your seat.

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Some Members are saying that tomorrow, she can place the reply on the Table. Then, there is no point in asking clarifications. If she replies now, you can also seek certain clarifications. So, let her reply now.

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Madam Minister, you may reply, now.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Thank you, Sir.

I have listened to all the hon. Members, who have made extremely important points, suggestions, expressed their emotions, raised points that are absolutely vital with regard to Mother Ganga.

Sir, Mother Ganga is not just a river.

एक माननीय सदस्य : मैडम, हिन्दी में बोलिये।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I am sorry. I can speak in Tamil if you like. मैं तमिल में बात करूँ।

श्री रेवती रमण सिंह : नहीं, नहीं, आप अंग्रेजी में बोलिये।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Thank you.

So, the river Ganga is, I believe, more than just a river. Some Members have called it mother. Some Members have talked about the origin and inception from Bhagirath of Mother Ganga. I believe that Mother Ganga is a thread, is a rope, is a rope of love and harmony, a symbol of national integration that binds the entire nation together.

There are my colleagues, who come from the extreme south of the country; those friends and hon. Members, who have spoken before me, come from places that are around Mother Ganga; those who have spoken before me come from where Mother Ganga originates; and I come from the deepest south, from the State of Tamil Nadu, and even there Mother Ganga is revered.

We talk about Mother Ganga and we sing about Mother Ganga. Our daughters, sisters and mothers are named Ganga. Ganga is a thread, is a bond, is an eternal bond of national harmony that binds the entire nation.

Therefore, the hon. Prime Minister and the entire Government are committed to maintaining the river Ganga, to maintaining and preserving the beautiful purity of the river Ganga and to maintaining the flow of Ganga.

So many Members have spoken so emotionally, so passionately the way the Ganga is wound and bound with our lives from birth to death; the way the children play along the banks of the River Ganga; the way the farmers farm their lands on the banks of the Ganga; the way that women tell tales on the stories of the Ganga; the way the cattle are brought to bathe in the Ganga; the way old and young people sit and watch the flow of the river and watch their lives go by on the Ganga; and the way people from birth up to death are cremated on the shores of the Ganga. So many people from all parts of the country, from the deepest South from Kanyakumari, have homes over there in Varanasi along the holy Ghats of the Ganga. So, the Ganga as a river that binds the entire country; and the Ganga as a river is of utmost importance to every single Indian. It is a symbol of our national integration. It is a symbol of our purity and it is a symbol to which we are utterly committed and dedicated to maintaining the purity and maintaining the flow.

I would like to thank Shri Rewati Raman Singh and Shri Sharad Yadav for bringing this extremely important subject before this House and I would like to thank every single Member for the important views that they have raised.

Before going on to the major points that have been raised by the hon. Members, I would like to make a point that three important issues were raised. First--and I think that was the one issue that exercised all the Members--was the entire question of dams, whether the flow of the river has been cut down by dams and whether the flow of the river at the point of origin has been cut down by the dams.

The second important point that was raised by the hon. Members is the question of pollution, after it flows through the dams, after it is used up at various levels, the question of why and how the water is polluted, what we can do about that pollution.

The third very important point is something about sand mining. The fact that sand mining and illegal sand mining that occurs on the banks of the Ganga is something that all of us have to pay a great deal of attention to and after that, but not less important, I need to deal also with a very important issue, that is, the question of where balance has to be maintained, where the upper reaches of the Ganga the water is taken away and diverted in various canals for irrigation purposes. That is also a reason why the flow of the river is also being cut down to a certain extent. There again we have to balance the needs of our brothers in agriculture and then see how we can make sure that the flow of the river continues to maintain its purity, to maintain the flow and to maintain its life giving properties right through the flow, throughout the flow of the river right down to the last possible point.

In a lighter vein I would like to say that I am extremely happy that all our hon. Members have kept talking about Mother Ganga. I think it is one day when women have got a great deal of importance in this hon. House. I am sorry that Sharad Yadav Ji is not here. He and the other hon. Member, I think, Dr. Baliram mentioned that the Prime Minister probably changed the Minister for Environment because he spoke in favour of the Ganga. I would like to assure them that it is simply not true. This is one Government, with one policy and we are totally committed to preserving whatever policy to preserve and protect the environment, particularly Mother Ganga.

As far as Sharad Yadav Ji is concerned, I believe that with his opposition to the Women Reservation Bill, maybe, he does not have confidence that a woman Minister can do the same justice to the River Ganga. But he is not here just now. I would like to reassure him that we are absolutely committed to taking every single one of the actions that all the hon. Members have raised. I would like to deal with them one by one. First, I just want to make a few general points. Then, I want to take the points made by the hon. Members. The uniqueness of the Ganga stems from a variety of reasons. The Ganga is history, the Ganga is poetry, the Ganga is geography and the Ganga is economy.

If it is a stuff of our legends; if it is a stuff of our myths; if it is a stuff of our imagination, it is also the stuff of our history. So, many stories are woven around the Ganga. It is also our geography. We are changing our geography. We define our

geography. What happens on the banks of the Ganga in Bihar; what happens in Patna; what happens in Varanasi; what happens in West Bengal – our geography is defined by the flow of the Ganga. A mythology is defined by the flow of the Ganga. Above all, as another hon. Member pointed out, our economy is defined by the flow of the Ganga.

It is stated that the State of Uttarakhand, which has constructed a dam at Tehri, and the water levels have come down. I want to tell the hon. House that the Ministry of Forests and Environment has actually assigned the study to the Hydro Energy Centre, the Indian Institute of Technology, Roorkee for an assessment of the cumulative impact of the hydro power projects in the Alaknanda-Bhagarathy basins upto Devprayag. Thirteen hydro power sites have been commissioned in the study area till date with the total installed capacity of 1851 MW and annual generation of 7860 MU. Fourteen projects of 2538 MW capacity are in an advance stage of construction. Forty-two projects with an installed capacity of 4644 MW are in different stages of development. Hydro power projects above one megawatt only have been considered in the study. But, all the sites, except the Tehri Project, are basically run-of-the-river projects. They are not dams. They are run-of-the-river projects. I am not, for a moment, saying over here that run-of-the-river projects are alright. So many of you have said that sometimes run-of-the-river projects change the course of the river. They dig tunnels in the Himalayas. They create problems especially in the seismically very sensitive zones. They create tremendous problems when they become tunnels and the water supply is cut down. Certainly, we have to take note of all these issues. I believe, it is the right of the people of Uttarakhand to ask from the Government of Uttarakhand and it is our responsibility as the Government at the Centre to assess these projects. I would like to assure this House and every single Member who is sitting over here.

I myself come from a lower riparian State. I come from the last State at the bottom where the Indian Ocean meets the Arabian Sea. As from the lower riparian State, I am aware as to what happens when rivers pass through various States and what are the rights of the lower riparian States? Therefore, as a Central Government, it is our responsibility to take very seriously every proposal that has been submitted to us for consideration for these dams, study the environmental impact very carefully, make sure that they have no impact upon the flow of the river and upon lower riparian States. That is our responsibility. I assure this House that we will ensure that the environmental impact – whether it is seismic impact, whether it is a question of run-of-the-river, whether it is a question of the future of the river – it is our duty to see that it is protected. We will ensure that it is protected.

Sir, as far as the question of pollution is concerned, this is a very important question. With great respect, I would like to submit that hon. Members have not actually paid enough attention to it. I know it is something which agitates all of us; I know it is something which agitates me. When I come from the State of Tamil Nadu and somebody dams up a particular river that comes into my State, the people who live in that State are bound to suffer. So, this is the first thing that comes to arise. However, the major problem in relation to the Ganga is the question of pollution. What are the details regarding the pollution?

श्री रेवती रमण सिंह (इलाहाबाद): माननीय मंत्री जी, I can speak in English also but I will speak in Hindi. माननीय मंत्री जी, आपने कहा कि प्रदूषण ही सबसे बड़ी समस्या है। प्रदूषण तो तब है जब गंगा में पानी रहेगा। जब गंगा में पानी ही नहीं रहेगा तो प्रदूषण पर नियम-कानून बनाने से क्या होगा? आपको मैं इन्वाइट करता हूँ। आपने रूड़की के आंकड़ें पढ़ दिए। आप जरा बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, उन्नाव, पटना आइए। मैं आपको दिखाऊंगा कि गंगा की क्या दुर्दशा हो गयी है।

माननीय मंत्री जी, आपने कह दिया कि उत्तराखण्ड को बिजली की जरूरत है। उत्तराखण्ड या देश को अगर बिजली की जरूरत है तो क्या आप भारतीय सभ्यता-संस्कृति का नाश कर देंगी?

भारत की सभ्यता और संस्कृति नहीं बचेगी, हिमालय नहीं बचेगा। आप कह रही हैं कि टनल बनाने से क्या होगा, टनल से ही नाश हो रहा है। वहां ब्लॉस्टिंग की जा रही है। कच्चा पहाड़ है।...**(व्यवधान)**

श्रीमती जयंती नटराजन: वही मैं कह रही हूँ।

श्री रेवती रमण सिंह : माननीय मंत्री जी, आप इस तरह का जवाब न दीजिए। आपने खाली जवाब दे दिया, अगर आप इसे गंभीरता से नहीं लेंगे तो देश खत्म हो जाएगा, पर्यावरण खत्म हो जाएगा।...**(व्यवधान)** आप ये बात करते रहिएगा। हम प्रधानमंत्री जी से उम्मीद करते थे, उन्होंने गंगा प्राधिकरण बनाया।...**(व्यवधान)**

श्रीमती जयंती नटराजन : आप मुझे जवाब देने दीजिए। मैं वही कह रही हूँ, जो आप कह रहे हैं कि वहां पर टनल नाश करेंगे, हम परमीशन नहीं देंगे।

MR. CHAIRMAN : Please address the Chair, Madam Minister. Otherwise, it will become a debate.

श्रीमती जयंती नटराजन: जहां टनल होंगे, प्रोबलम होगी, वहां हम परमीशन नहीं देंगे, यही मैं कह रही हूँ।

Sir, I want to repeat something. My entire point is that, that is the reason why I took it as the very first issue. Many hon. Members have concentrated greatly upon the question of dams. That is why I read out a study that has been conducted by the Ministry of Environment. There are many studies. I assured the House at least three times that whoever

may apply for a dam, it is the right of any citizen to apply, as the Central Government it is our responsibility to maintain the flow of the Ganga. I assured the House and I can repeat it another five times if you like that we will not allow the Ganga to be reduced to a trickle. We will ensure that the flow of the Ganga remains. We believe in it very strongly and I said repeatedly that as a lower riparian State.....(*Interruptions*) If politics is going to be made out of it, then I have nothing further to say.

Let me go back to my issue. The question of dams is very important. All the hon. Members were exercised by the issue of whether dams can be allowed, whether tunnels can be built. I am assuring the House one more time that as the Central Government, it is our duty and responsibility to see that no dam is allowed to be built which may create some problem in a seismic zone, which may create any lack or lessening of the flow in the river Ganga or to create any problem for the lower riparian State of the Ganga. I can do no more than that.

I am, therefore, moving on to the next point, which is, I believe, an equally important issue. So many Members have spoken about the problem of pollution. Pollution of whatever water is flowing down, after those run-of-the-river dams which have come down, is something that needs to be tackled in a very serious way. I want to deal with the question of pollution.

Before that, I would also like to point out a very important issue. Members were talking so much about the dams. Even though it was this Government which has already spent Rs.600 crore on three important hydro-electric projects on the river Bhagirathi – the Loharinag Pala, the Pala Maneri and the Bhairongathi projects in Uttarakhand; the Loharinag Pala was an NTPC project – all the three were cancelled by the Central Government. All the three were cancelled only because the Government is committed to ensuring that the river Ganga continues to flow with the greatest flow and with the greatest of purity. So the Government is absolutely committed.

First of all, the Ganga Action Plan which was commissioned by Shri Rajiv Gandhi began its work and now the Ganga Action Plan is working in full swing under the National Ganga River Basin Authority. Somebody said that no meetings have been held. This is not true. Hon. Prime Minister is the Chairman of the National Ganga River Basin Authority. Chief Ministers of the respective States are also Members and senior members of the Cabinet are also members. Two meetings have been presided over by the hon. Prime Minister on 5th October 2009 and the 1st November 2010. A Standing Committee has been chaired by the hon. Finance Minister on the 27th December 2010 and the next meeting is going to be held later this month.

The next meeting is going to be held later this month. Therefore, the National Ganga River Basin Authority is carrying on its work with a great deal of seriousness and also Rs. 15,000 crore as a whole have been set aside for the work to be carried out in the National Ganga River Basin Authority, which should be viewed holistically. Out of that. Rs. 2,006 crore have already been spent.

Pollution loads on rivers, including the Ganga, have been increasing over the years with rapid urbanisation, industrialisation and increase in population. Extraction of water for irrigation, industrial and drinking purposes is compounding the problem and making the water in the river less. There is a very large gap between the quantum of pollution loads like sewage and industrial effluents which are being discharged into the rivers and the available sewage treatment capacity. This problem is further compounded by the inadequate flow, as the hon. Member has said. There are toxic pesticides also coming from agricultural fields, which flow into the river, besides open defecation, cattle-wallowing, garbage disposal, carcass-dumping and so on. And the deforestation, which other Members have pointed out, has also contributed to the problem.

Now, all the Central and State Agencies have to cooperate. Tackling pollution in the river is something which we have to do together. Raw untreated domestic sewage is pumped into the Ganga. This is a sad tragic fact that all of us have to face very squarely and also to be responsible for. Every single one of us has to try and prevent it. As per the Central Pollution Control Board's figures, the estimated wastewater generation in the year 2009 from 498 class I and 410 class II towns in the country was around 38,254 million litres per day (MLD). Against this, we have a treatment capacity of only 11,787 MLD. So, there is a gap of 26,467 MLD to treat sewage. So, creation of sewage treatment capacity has not kept pace with the growth in population all along the sides of the River Ganga.

In the Ganga basin, approximately 12,000 MLD sewage is generated, for which there is only a treatment capacity of 4,000 MLD. Approximately, 2,900 MLD of sewage is discharged into the main stem of the River Ganga.

Sir, several Members spoke about industrial pollution. Volume-wise, it is only about 20 per cent of the whole pollution, but because of its toxic and non-biodegradable nature, this assumes far greater significance. The major contributors are tanneries, distilleries, paper mills and sugar mills.

The State Pollution Control Boards of the States, which lie along the Ganga, are required to monitor the compliance of effluent discharge standards by the industries and action must be taken against the defaulting industries. Somebody asked what action we have taken. I would like to point out that action must be taken by the State Pollution Control Boards (SPCBs) under the powers delegated to them by the Central Government under the relevant provisions of Water (Prevention and Control of Pollution) Act and Environment (Protection) Act. I would like to urge the hon. Members, my respected colleagues, to urge their respective State Governments to take action against the defaulting industries immediately so that the SPCBs can, once again, re-assert their powers and make sure that the water becomes pure again.

Sir, an important challenge is to maintain the ecological flow. As I said before, a large portion of the water of the Ganga gets diverted for agricultural reasons. This also reduces the flow downstream.

Then, there is the issue of inefficient and wasteful use of water. The urban bodies which take water from the Ganga have to ensure that it does not happen. Now, we have to become very conscious that every drop of water is precious. I believe that it is as important as making sure that the sewage treatment plant in every municipality works properly. It is equally important to ensure that water is efficiently used and there is no inefficiency and wasteful use of water in the urban areas. Therefore, the urban local bodies and the State Governments should work hand in hand along with the Central government to ensure that these are put into action.

The Ganga Action Plan Phase II in 1993 covered the tributaries of the Ganga, namely, the Yamuna, the Gomti, the Damodar and the Mahananda. The total expenditure incurred for abatement of pollution in River Ganga by the Ministry of Environment and Forests is Rs. 1,045 crore and sewage treatment capacity of about 1,100 MLD has been created.

Sir, purely as a result of these steps -- which have been undertaken by the Central Government; by the Ganga Action Plan Phase -- II; and by the expenditure and the sewage treatment capacity that has been created -- the river water quality in key areas, namely, Bio-chemical Oxygen Demand (BOD) and Dissolved Oxygen (DO) has improved in most of the locations. It has improved in most of the locations, except in the stretch between Kannauj and Varanasi in Uttar Pradesh. It is not perfect. We are working hard and we will continue to work harder. This has happened because of population and of other pressures also. These are all results of the monitoring undertaken by IITs at Kanpur, BHEL and Patna University.

But as hon. Member, Mr. Mahtab pointed out, the faecal coliform count in Ganga, which is a measure of bacterial contamination, far exceeds the prescribed standards at several locations. I agree and I acknowledge this problem. But I only want to point out that we are really working hard. We are totally focused upon it, but for the work, which we have already undertaken, it would have been much worse. Now, that is not a great consolation and it is not something to be proud about. I am only pointing out that a great deal has been done and a great deal remains to be done. We remain committed to making sure that we take the task forward to its logical conclusion.

As regards inadequate operation and maintenance (O&M) of the sewage treatment plants (STPs) by the States, it is a major cause of concern. I would like to urge the hon. Members to urge their State Governments to make sure that there is no under-utilisation of these STPs. There should be a connecting sewerage network. There is no use having a sewage treatment plant if the entire sewerage network of the city is not working. So, unless the sewerage network is maintained by the Urban Local Body and by the State Government, the entire sewage treatment plant becomes a waste and the domestic effluent is immediately discharged untreated into the river Ganga. So, branch sewers and house sewer connections are also a very important problem, which have to be tackled by the Urban Local Bodies. We have to build awareness among the Urban Local Bodies and the State Governments to make sure that these sewerage treatment plants work.

We remain committed to giving grants; to participating in monitoring; to giving them expert advice and to do whatever we can, but this is an effort for which the State Government, local bodies and every citizen has to cooperate. Otherwise, this is not an effort that is destined to succeed.

As far as the National Ganga River Basin Authority (NGRBA) is concerned, this was an empowered planning, financing and monitoring authority. As I said, all the Chief Ministers are members of this Authority. The NGRBA has decided that approximately 135 kms. stretch from Goumukh to Uttarkashi on the river Bhagirathi should be declared as an eco-sensitive zone under the Environment (Protection) Act. It has accordingly been declared and is being monitored. The draft notification has been issued in July, 2011.

As I said, there is a Ganga Basin Management Plan. What are the measures that we are taking in general to improve the implementation of projects under NGRBA? We want to involve everybody. It is not something that we can do alone. Therefore, we want

to constitute State-level empowered State River Conservation Authorities (SRCAs) under the Chief Ministers in the five Ganga States; we want to set up State Program Management Groups (SPMGs) as dedicated implementation institutions in the States; we want to sign tripartite Memorandum of Agreements (MoAs) with the State Governments / Urban Local Bodies; we want an independent appraisal of the Detailed Project Reports by reputed professional institutions; we want to install third-party inspection for projects under NGRBA; and we also intend to set up a dedicated cell under the Central Pollution Control Board (CPCB) for inspecting and monitoring of industrial units discharging effluents into the river Ganga.

Therefore, I will repeat once again that the Central Government can only supplement the efforts, which are taken by the State Governments and by the Urban Local Bodies (ULBs). It is the Urban Local Bodies, which are on the spot. It is not an abdication of responsibility. It is the Urban Local Bodies and the Governments, which are on the spot that have the primary duty and the capacity also to ensure that these measures work.

I will be very quick to answer and I know that we have a shortage of time. I think I have already answered what Shri Rewati Raman Singh said that the two meetings of the NGRBA had never met. I have already pointed out that we have already met and State level meetings are also going to be held. The issue of the river flow is being addressed. The question you raised that it has no water, how can you keep it clean? That is also an important issue. I need to tell him through you, Sir, which is being addressed under the NGRBA. I have already said that three hydro power projects have already been cancelled. The entire basin management plan is being prepared by a team of experts which will ensure the flow of water. NGRBA is a legally empowered authority created under the Environment Protection Act. The implementation, as I said, has to be done by the States and the cancellation of these three projects is something that I referred to in greater detail.

Sir, excessive exploitation is something that I think should concern every single one of us. And as far as excessive exploitation is concerned, it is matter of people and it is a matter of democracy. I think we all have to agree in a spirit of cooperation in this august House and outside to cooperate with each other in sharing the water. Otherwise, there will be a confrontation between the people of upper riparian State and lower riparian State. I think upper riparian States have to be extremely conscious of the fact that rivers are national assets and rivers have to be dealt with at the national level. Therefore, the river Ganga is more important as a national river and has to be looked in this light that it is a national asset and that it has to be looked at flow of the river at the lower riparian States. I only want to refer once again to what I am saying about the flow of the river and the rights of the lower riparian States. As far as dams are concerned, whatever my repeated assurance is that the Central Government will not do anything that will harm or endanger the natural flow of the river Ganga which is a national asset and the treasure.

Sir, the mission Clean Ganga as decided by the NGRBA aims to achieve that no untreated sewage will be discharged into the Ganga by 2020. We have already set up a mission Clean Ganga and we have also appointed a new mission Director who will take over very soon and we will promote new technological approaches to ensure that the River Ganga becomes clean by 2020 which is our goal. Illegal sand mining has to be curbed also by the State and District authorities and we have been repeatedly saying that this illegal sand mining has to be curbed. I have also written to the Chief Minister of Uttarakhand to ensure that the illegal sand mining in Uttarakhand should be immediately curbed. I have repeatedly said that community participation is extremely important. I do not want to repeat that again.

I think hon. Member Shri Baliram talked about projects for Varanasi and Allahabad. We have already sanctioned projects for cleaning of STPs at Varanasi and Allahabad. We have given Rs. 296 crore for Varanasi and Rs. 447 crore for Allahabad. This is now for the State Government and for the urban local bodies to ensure that this money is properly, wisely and efficiently used. We have done our bit. We are willing to go there and give our advice. It is now for your Government to go there and make sure that those STPs work because if the State Government and the urban local bodies do not cooperate, the river Ganga is not going to get clean particularly, at Varanasi and at Allahabad even after spending all that money.

Mr. Sharad Yadav mentioned about Ganga expressway. No proposal for environment clearance has been received by the Union Government. Nobody has asked us to give clearance for the Ganga expressway. And also, the economic growth and power requirements in relation to the Ganga expressway are something that we deal with when an application comes. So far, we have not received any application. That question does not arise. He said that there is no full-fledged office, well I am the office, Sir. He can always talk to me at any point of time.

SHRI JAGDAMBIKA PAL: They have applied. But the State Government is already there.â€ (Interruptions)

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I would like to assure the hon. Member that if something is being done without proper approval, we will take due note of it and take action under the law. A separate office has been set up for the National Ganga River Basin Authority. If only he took the care to come to Paryavaran Bhavan, he would know that the office is there.

A full time MD has been appointed and lots of dedicated staff are sitting over there. It is only waiting for the hon. Members to come and visit us. I would like to invite them to come and visit us so that they can see that there is a full-fledged office.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : First call the Consultative Committee meeting there so that we can come there.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I agree with you.

About the Ganga Expressway Project, it has been stayed by the High Court. That is what I understand from my officers. I understand that it has been stayed by the High Court.

श्री सतपाल महाराज : मंत्री जी, उत्तराखंड के लिए भी कुछ बोलिए।... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : She has already explained that.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: As far as Kanpur tanneries are concerned, Central Effluent Treatment Project was implemented under the Ganga Action Plan. But it has not been maintained and operated properly. This is the problem that I find throughout this area. The operation and maintenance of all the sewage treatment plant – I am sorry, I am not being political, I am just stating a fact – is with the State Government. It is for the Government of Uttar Pradesh to maintain that plant. We can give them the money to build it. As far as Kanpur is concerned, that plant is simply not maintained and operated properly. And under the National Ganga River Basin Authority, we are revamping this with the active involvement of the tanneries' association. The State Government has to ensure that tanneries do not dislodge their effluent directly into the drain by-passing the CETP. This is something that the State Government has to do. We can only sit here at the Centre and do this.

Shri Lalu Prasad ji talked about project implementation. As I said repeatedly, this is the responsibility of the State Government and their agencies. The Central Government on its part is taking a large number of steps particularly to check the misuse of funds. One hon. Member said that all the funds have gone into the stomach of the Ganga. We are taking, therefore, third party inspection. We want a proper audit; we want frequent inspection by officers. But the basic responsibility of implementing the scheme or of spending the funds or seeing that they are properly implemented has to be that of the State Government. This is the reason why I repeatedly say that the State Government has to take the primary responsibility.

About the Dolphin Conservation Plan, it has already been prepared. It has been prepared by experts. We are putting it into effect and very soon I hope that we will all go together and see Dolphins perhaps in another Consultative Committee meeting when we go along the River Ganga!

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : What about the Gariyal Project?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I know, there is also the Gariyal Project which I have not yet mentioned.

As far as Tamil Nadu is concerned, we have sanctioned Rs.915.92 crore of which Rs.623.60 crore has already been released by the Government of India. The total expenditure incurred by the State Government was Rs.871.74 crore. About 13 towns were covered. The funding pattern is hundred per cent by the GOI. In five old towns, it is hundred per cent by the GOI and in seven new towns, it is on the basis of 50:50 between the Centre and the State. The names of the towns are Chennai, Bawani, Erode, Karur, Kumbakonam, Kumarapalyam, Madurai, Mayiladuthurai, Pallipalayam, Tanjavur, Tiruchirappalli and Tirunelveli. About 83 schemes have been sanctioned. The number of schemes completed is 56 and sewage treatment capacity created is 477.66 MLD.

Sir, I would like to refer to the status of the NGRBA projects in Uttarakhand. Fifteen projects have been sanctioned by the NGRBA in Uttarakhand at a total cost of Rs.155.60 crore. The funds released by the Government of India so far are Rs.32.57 crore. Corresponding share that has to be provided by the State is Rs. 9.77 crore. The total funds available are Rs.32.57 crore. Unspent balance is Rs.24.60 crore.

Every single State is getting due consideration as far as the cleaning of rivers, maintenance of rivers and making sure that at least abatement of the pollution in our rivers takes place. Rivers are our lifeline. The mother Ganga is the symbol of our national integration. We will leave no stone unturned to make sure that the flow of the Ganga continues. But I want to conclude by pleading with all of you. You have seen mother Ganga. This requires the cooperation and sustained efforts by the Central Government, by the State Governments, by every single citizen of this country. ... (Interruptions)

श्री शैलेन्द्र कुमार : सभापति महोदय, आप उत्तराखंड सरकार से बात करें और वहां जो बांध बन रहे हैं, उन पर रोक लगवाइये। ... (व्यवधान)

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: I have already spoken about that.

And it is only by joining together that we can save the Ganga, the symbol of our national integration.

श्री रेवती रमण सिंह : सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूँ कि इनका जवाब निराशापूर्ण है। इन्होंने कहा कि स्टेट गवर्नमेंट बना रही है। ...(व्यवधान) आप पर्यावरण मंत्री हैं। आप उसमें रोक क्यों नहीं लगवा रही हैं? उत्तराखंड को अगर चाहिए, तो वह सोलर एनर्जी से क्यों नहीं बिजली पैदा करता? विंड से क्यों नहीं बिजली पैदा करता? ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : You ask what you want.

...(Interruptions)

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): सभापति महोदय, मंत्री जी अपनी जिम्मेदारी को राज्य सरकार पर टाल रही हैं। ...(व्यवधान)

श्री रेवती रमण सिंह : सभापति महोदय, मैं और मेरा दल मंत्री जी के जवाब से असंतुष्ट है, इसलिए हम सदन से बहिष्कार करते हैं।

19.52 hrs.

-

Shri Rewati Raman Singh and some other hon. Members then left the House

श्री दारा सिंह चौहान : माननीय सभापति जी, हम मंत्री जी के जवाब से संतुष्ट नहीं हैं। ...(व्यवधान) वे मूल प्रश्न से हट रही हैं। ...(व्यवधान) अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए राज्य सरकार पर दोषारोपण लगा रही हैं। ...(व्यवधान) इसके विरोध में हम सदन से बहिष्कार करते हैं।

19.53 hrs.

-

Shri Dara Singh Chauhan and some other hon. Members then left the House

-

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Now the House will take up 'Zero Hour' and the sitting can be extended till this is over. I think the House agrees with this.

SOME HON. MEMBERS: Yes.